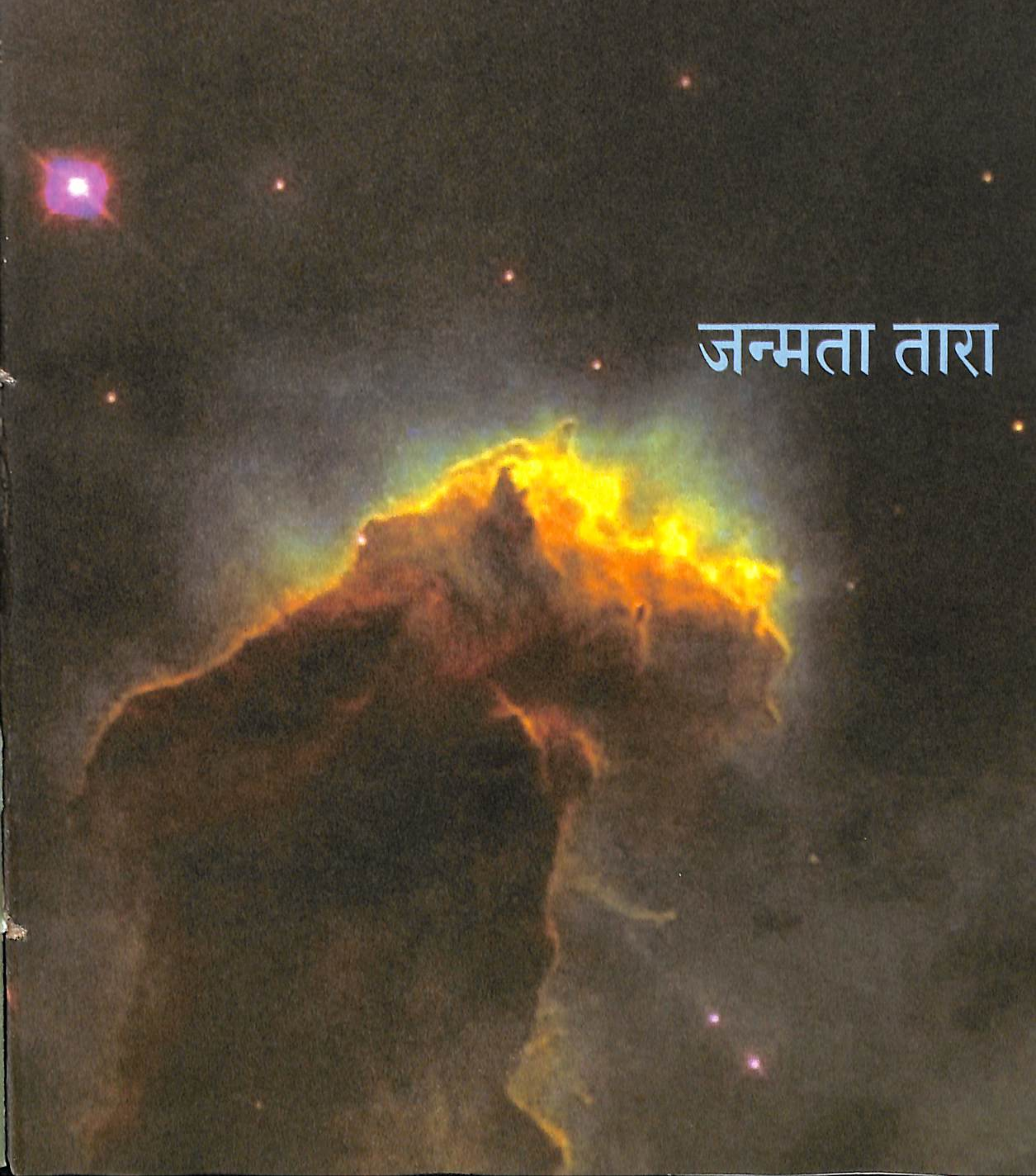
चकमक

अक्टूबर, 2004 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 10.00

जन्मता तारा





आकाश साहू, चौथी



हरिचरण, चौथी

इस बार की बात...

दोस्तो

तुम अभी-अभी उत्सवों की चकाचौंध और धमाचौकड़ी से फुरसत हुए होगे। फुरसत भी क्या अभी तो दीवाली और ईद आने वाले हैं! तुम्हारे आसपास भी दुर्गा स्थापना हुई होगी। क्या-क्या किया तुमने वहाँ! गाने गाए, खेल खेले, नाटक किए, डाँस किए, डाँडिया किया....। इस धूमधड़ाके में क्या सब शामिल हुए?

हमारे घर के बिल्कुल सामने एक बड़ा पण्डाल लगा था। उसमें दुर्गा की विशाल मूर्ति थी। पूरे नौ दिनों खूब चहल पहल रही। हज़ारों बल्ब लगे। आठ दस खूब तेज़ आवाज़ वाले माइक लगे। सुबह से लेकर रात के दो बजे तक पूरा मोहल्ला इन तेज़ और कर्कश आवाजों से सराबोर होता रहता। फिल्मी धुनों वाले भजन चलते रहे। हर पण्डाल के आसपास एक अच्छा खासा बाज़ार लगा रहा। तेज़ आवाजों शोर के कारण पण्डाल के आसपास के बुजुर्ग काफी परेशान रहे। लेकिन क्या कहें, किससे कहें। तुम देखते ही होगे इस तरह के आयोजन में ऐसी शिकायतें कभी गम्भीरता से नहीं ली जाती हैं बल्कि हँसी उड़ाई जाती है।

मोहल्ले के लोगों में होड़ लगती है कि कौन कितनी बड़ी मूर्ति लेकर आएगा। फिर इसके लिए जबर्दस्ती चंदे की उगाही होती है। इंकार करने वाले को अपमानित तक होना पड़ता है। ऐसी ही होड़ सजावट को लेकर होती है। बिजली की कमी के कारण सिंचाई न हो पाने पर हमारी फसल सूखती रहती है और ऐसे आयोजनों में बेवज़ह कितनी बिजली फूँक दी जाती है। ऐसे आयोजनों का फायदा व्यापारी उठाते हैं। ऐसे आयोजनों की आड़ में बड़ी-बड़ी दुकानें लगती हैं। कुल मिलाकर इस तरह के आयोजन कुछ लोगों के नफा कमाने का जरिया बन रहे हैं। पहले इन अवसरों पर हमारे आसपास का कुम्हार मूर्ति बनाता था। मिट्टी से कितनी खूबसूरत मूर्ति बनती थी। रंग की जगह फूल-पत्तियों और गेरू आदि इस्तेमाल किया जाता था। मूर्ति के आकार पर होड़ नहीं लगती थी। मूर्ति की सजावट के लिए जहरीले रसायनों का उपयोग नहीं होता था। लेकिन अब तो मूर्ति बनाना एक अच्छा खासा उधोग हो गया है। तुमने शायद पढ़ा होगा कि गुजरात के एक शहर में नदी में जब मूर्तियाँ विसर्जित की गईं तो उस नदी की हज़ारों मछलियाँ मर गईं। क्योंकि उन मूर्तियों में एक नुकसानदायक रसायन का प्रयोग हुआ था। हमारी आँखों को अच्छे लगने वाले ये रंग पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं। हर साल हम अपनी नदियों में लाखों टन मिट्टी और क्विंटलों जहरीले रसायन डाल आते हैं। यदि यह सब ऐसे ही चलता रहा तो हमारी नदियाँ बच पाएँगी? क्या हम इन उत्सवों को ऐसे नहीं मना सकते जिसमें हमारे आसपास के लोगों को भी तकलीफ न हो और हमारा पर्यावरण भी बचा रहे?

थोड़े ही दिनों में दीवाली आने वाली है। पटाखों की बड़ी-बड़ी दुकानें सजने लगी हैं। पटाखे की गुणवत्ता ही इसमें मानी जाने लगी है कि वो कितना शोर करता है। इन पटाखे बनाने वाली फैक्ट्रियों में बड़ी संख्या में बच्चे काम करते हैं। हर साल इन्हीं फैक्ट्रियों में कितनी ही दुर्घटनाएँ होती हैं। कितने ही मासूम बच्चे मारे जाते हैं। लोग पटाखे लेना बन्द कर दें तो शायद पटाखे बनना भी बन्द हो जाएँ। दीवाली पर पहले घर फूल-पत्तियों के झूमरों से सजाए जाते थे। रंगोलियाँ बनाई जाती थीं। पर अब हम त्यौहार कुछ अलग ही अंदाज़ में मनाने लगे हैं। इन सबके बावजूद हर साल यह सब होता चला जा रहा है। कैसे ऐसी चीज़ें बन्द होंगी? और कौन बन्द करेगा? उम्मीद है तुम इन सब मसलों पर सोचोगे!

तुम सबको दीवाली और ईद की शुभकामनाएँ!

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 20 - अंक-4 अक्टूबर 2004

सम्पादन	वितरण
विनोद रायना	कमल सिंह
अंजलि नरोना	अनिल लोखण्डे
शशि सबलोक	मनोज निगम
टुलटुल विश्वास	**सहयोग**
सुशील शुक्ल	कविता सुरेश
विज्ञान परामर्श	राकेश खत्री
सुशील जोशी	शिवनारायण गौर

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य

ई-7/एचआईजी-453,

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल-462 016 (म.प्र.)

फोन - 2463380

eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ - यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति	:	10.00 रुपए
छमाही	:	50.00 रुपए
वार्षिक	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
आजीवन	:	रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।



एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष - 20 अंक - 4 अक्टूबर 2004

क्या-क्या है इस अंक में



एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा और जनविज्ञान के क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

ट्विंकल-ट्विंकल लिटिल स्टार!

एक तरफ है एक अकेला तारा और दूसरी तरफ है तारों से अटा आसमान। बताओ किस की रोशनी ज़्यादा होगी??????

तर्क तो यही कहेगा कि बहुत सारे तारों की रोशनी ज़्यादा होगी।

पर अगर वह अकेला तारा सूरज है तो! क्या तब भी तुम यही जवाब दोगे?

सभी तारे दिन-रात चमकते रहते हैं। लेकिन दिन में सूरज के आगे किसी की एक नहीं चलती। दूसरे तारों का प्रकाश कैसा ठण्डा सुहाना-सा लगता है और सूरज आग के गोले से कम नहीं लगता। क्यों??

आसमान में कितने तारे

कोई नहीं जानता आकाश में कितने तारे हैं। जिस दिन बादल न हों तब आसमान देखना। लगेगा जैसे तारों से अटा पड़ा है। जितना आकाश नज़र आएगा, उसमें लगभग 3000 तारे दिख जाएँगे। एक अच्छे टेलिस्कोप से देखोगे तो 3 अरब तक तारे देखे जा सकते हैं।

यह तो दिखने की बात हुई। एक अंदाज़ के मुताबिक आकाश में लगभग 200 अरब अरब तारे हैं। कितनी भारीभरकम संख्या होगी यह? उफ...

कितने बड़े हैं तारे?

शुरूआत करते हैं सूरज से। सूरज एक मध्यम आकार का तारा है। और इसका व्यास है 1392000 किलोमीटर - यानी हमारी पृथ्वी से 109 गुना। आसमान में बिन्दियों की तरह टिमटिमाते तारों में छोटे-बड़े सभी हैं। छोटे तारों का व्यास 16 किलोमीटर तक हो सकता है। और बड़े तारे सूरज से एक हज़ार गुना तक हो सकते हैं। कोई तारा हमें कितना बड़ा दिखेगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह हमसे कितनी दूर है। तभी तो सूरज सारे जहान को रोशन कर देता है और उससे कहीं बड़े तारों की दिए बराबर रोशनी भी हम तक नहीं पहुँचती है।

कितने दूर हैं तारे हमसे?

अंतरिक्ष में पिण्डों के बीच की दूरी इतनी ज़्यादा है कि हम इनका बस अंदाज़ ही लगा सकते हैं। जैसे एक अंदाज़ - अगर पृथ्वी से सूरज की दूरी को एक इंच मानें तो सबसे करीबी तारा हमसे चार मील की दूरी पर होगा। यहाँ तुमको बता दें कि सूरज हमसे 1अरब 50 करोड़ किलोमीटर दूर है।

एक और अंदाज़ - 400 किलो मीटर प्रति घंटे की रफ्तार वाले एक हवाई जहाज़ से (अगर मुमकिन हो तो) पृथ्वी से इस तारे तक पहुँचने में 1000000000 साल लग जाएँगे। जबकि यही जहाज़ भोपाल से दिल्ली एक घंटे में पहुँचेगा।

इतनी ज़्यादा दूरियों को मील या किलोमीटर में मापना कोई आसान काम नहीं। वैसे ही जैसे दिल्ली से मुंबई की दूरी को इंच में नापना। इसलिए इन दूरियों को हम प्रकाश वर्ष से नापते हैं। एक प्रकाश वर्ष यानी प्रकाश द्वारा एक वर्ष में तय की गई दूरी।

सबसे करीबी तारा हमसे 4.3 प्रकाश वर्ष दूर है। दूर वालों का तो अंदाज़ लगाना तक मुश्किल होगा। तारों के बीच की औसत दूरी चार से पाँच प्रकाश वर्ष है। कुछ हमसे दूर वाले तारे तो 80,000 प्रकाश वर्ष तक दूर हैं।

तारों का रंग

सभी तारे गर्म होते हैं। पर इसमें भी कम-ज़्यादा तो होता ही है। तारों की सतह के तापमान पर निर्भर करता है तारों का रंग....लाल, पीला, सफेद, नीला। कम तापमान (यह कम भी लगभग 2800 डिग्री सेंटीग्रेड है) पर तारा लाल दिखेगा। और गर्म होने पर पीला (जैसे 5500 डिग्री सेंटीग्रेड के आसपास के तापमान वाला सूरज)। इससे भी ज़्यादा गर्म (5500 से 28000 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान होने पर) होने पर वह नीला दिखेगा। रसोई गैस में दिखाई देने वाली नीले और पीले रंग की लौ में भी तापमान का ही फर्क होता है।

तारों का टिमटिमाना

तारों का प्रकाश लम्बे सफर के बाद हम तक पहुँचता है। इस सफर में पृथ्वी का वायुमण्डल भी आता है। बीच में तेज़-धीमे बहती गर्म-ठण्डी हवाओं की कई-कई मोटी परतें आती हैं। जब प्रकाश इन परतों से गुज़रता है तो कई अलग-अलग दिशाओं में परावर्तित हो जाता है। इसी वजह से तारों की छवि थोड़ी बदली हुई और हिलती हुई-सी नज़र आती है। इसे समझने के लिए पानी भरे एक काँच के गिलास में पेंसिल डालो। और बाहर से देखो। पेंसिल कैसी दिखती है?



अच्छा एक बात और बताओ...क्षितिज के तारे हमारे एकदम ऊपर के तारों से ज़्यादा टिमटिमाते हुए नज़र आते हैं। क्यों?

क्या तुम बता सकते हो कि कहाँ से देखने पर तारे हमें टिमटिमाते हुए नहीं दिखेंगे?

ग्रह क्यों टिमटिमाते नहीं लगते?

ग्रहों का प्रकाश भी इसी वायुमण्डल से गुज़रकर हम तक पहुँचता है। लेकिन वे टिमटिमाते नहीं लगते। आकाश में तारों का प्रकाश एक बिन्दु से आ रहे प्रकाश की तरह होता है। वायुमण्डल की परतों से वह पूरा का पूरा एक साथ मुड़ता-बिखरता है।

जबकि ग्रहों के आकार के कारण उसका प्रकाश चकती से आते प्रकाश की तरह होता है। वायुमण्डल की परतों से गुज़रते वक्त कुछ प्रकाश किसी एक तरफ मुड़ेगा तो कुछ किसी और तरफ। कुछ किरणें ज़्यादा चमकीली होंगी, तो कुछ कम। कुल मिलाकर हमारी आँखों तक प्रकाश लगातार पहुँचता रहता है। इससे वह टिमटिमाता नहीं लगता।

शशि सबलोक

तारा यानी क्या?



तारे का जन्म

अंतरिक्ष में हमसे बहुत-बहुत दूर। गैस और धूल का एक विशाल गोला। गुरुत्वाकर्षण के कारण ये केन्द्र की ओर खिंचते जाते हैं। लाखों सालों तक लगातार..।



गैस और धूल का सघन गोला उर्फ नैबुला

केन्द्र पर गैसों का दबाव बढ़ता जाता है। गैसें गर्म और ज़्यादा गर्म होती जाती हैं। इतनी कि ये दहक उठती हैं और लाल रंग की चमक छोड़ने लगती हैं।

तापमान के लगातार बढ़ते जाने से एक दूसरी रासायनिक प्रक्रिया शुरू होती है। इसमें केन्द्र की हाइड्रोजन गैस हीलियम गैस में बदलने लगती है। इससे ज़बरदस्त ऊर्जा छूटती है। गैसें चमकने लगती हैं और उसका सिकुड़ना बन्द हो जाता है - मुबारक हो! आसमान में एक और नया तारा आया है।

तारे की चमक कब तक?

हर तारे की अपनी चमक होती है। उसका जीवन ग्रहों की तरह उधार की रोशनी पर नहीं टिका है। लेकिन तारे में यह चमक तभी तक है जब तक उसमें हाइड्रोजन है। चमकने के दौरान हाइड्रोजन खर्च होती जाती है। इसके खत्म होते ही तारा भी खत्म हो जाएगा।

तारों का खत्म होना यानी क्या????

किसी तारे का जीवन उसके भार पर निर्भर करता है। भार ज़्यादा होगा तो चमक भी ज़्यादा होगी और उसका तापमान भी ज़्यादा होगा और वह खत्म भी जल्दी होगा। इस हिसाब से सूरज से दस गुना अधिक भार वाले तारों को खत्म होने में लाखों साल लगेंगे जबकि सूरज से दस गुना कम भार वाले तारों को खत्म होने में अरबों साल लग जाएँगे। कहते हैं सूरज को अपनी आज की स्थिति में पहुँचने में 40 करोड़ साल लगे हैं और शायद अगले 40 करोड़ साल में इसमें कोई खास परिवर्तन नहीं आएगा।



सूरज

तारों का खत्म होना

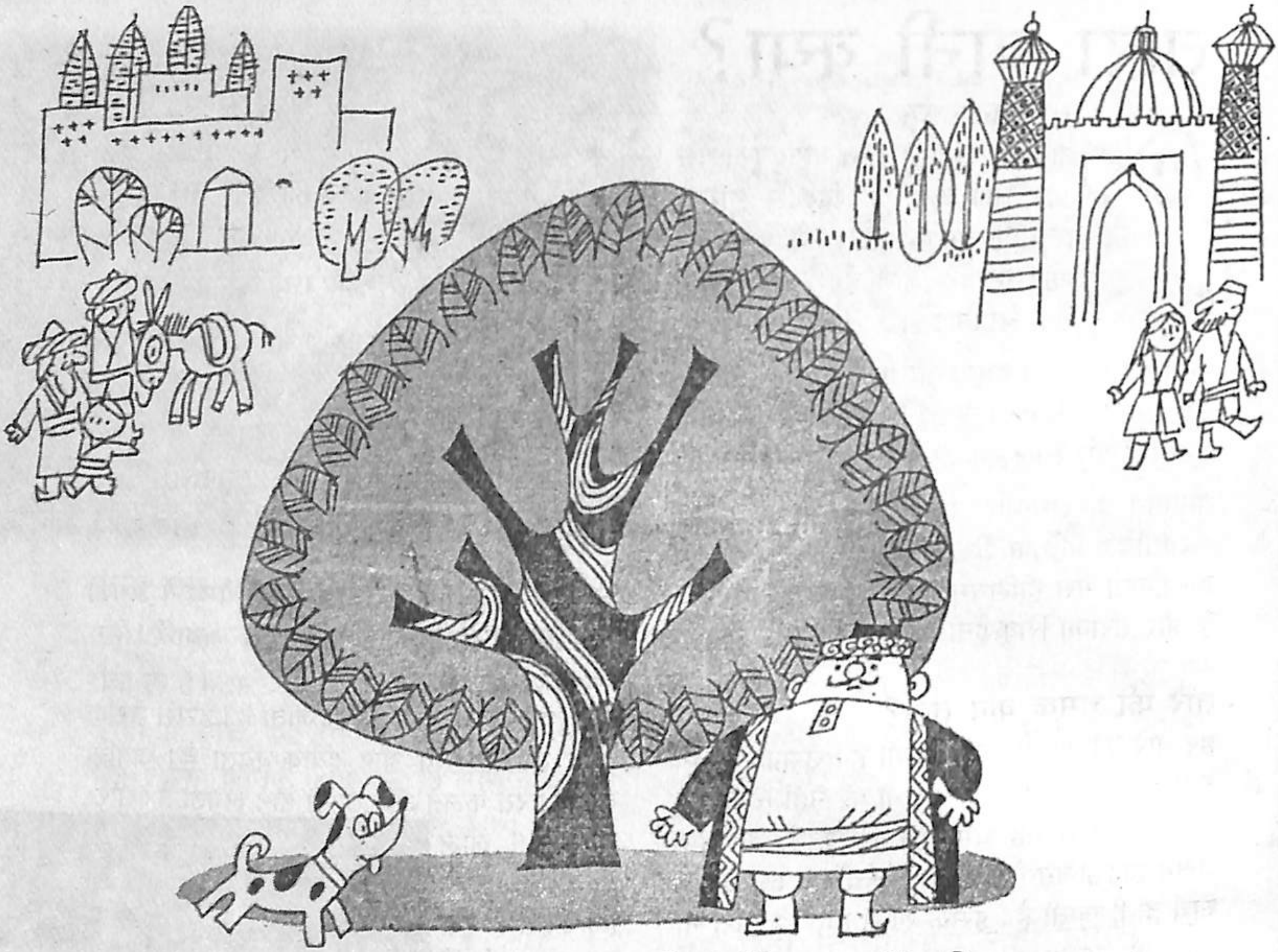
तारे में हाइड्रोजन कम होते जाने से उसका बीच वाला हिस्सा सिकुड़ता जाता है। इससे उसके केन्द्र का तापमान और दबाव बढ़ता है। जबकि बाहरी परतें फैलने और ठण्डी होने लगती हैं। धीरे-धीरे तारा लाल दानव बन जाता है। कहते हैं एक दिन हमारा सूरज भी ऐसा ही लाल गोला हो जाएगा। तब क्या पृथ्वी पर जीवन रह पाएगा? लेकिन ऐसा होने में अभी करोड़ों साल लगेंगे। सो बिना घबराए लेख को पढ़ना जारी रखें।



सिकुड़ता केन्द्र और फैलती बाहरी परतें

इन खत्म होते तारों का प्रकाश और तापमान लाखों-करोड़ों साल तक कम होता जाता हैं। अन्त में ये ठण्डे हो जाते हैं। इस स्थिति से पहले तक तारे चमकते रहते हैं।

सूरज से काफी कम भार वाले गैस के गोले तो तारे बन ही नहीं पाते हैं। उनका भीतरी तापमान बहुत ज़्यादा नहीं हो पाता है। इसलिए हाइड्रोजन से हीलियम बनने की प्रक्रिया शुरू नहीं हो पाती है। फिर वो चमके कैसे? और न चमके तो तारा कैसा?

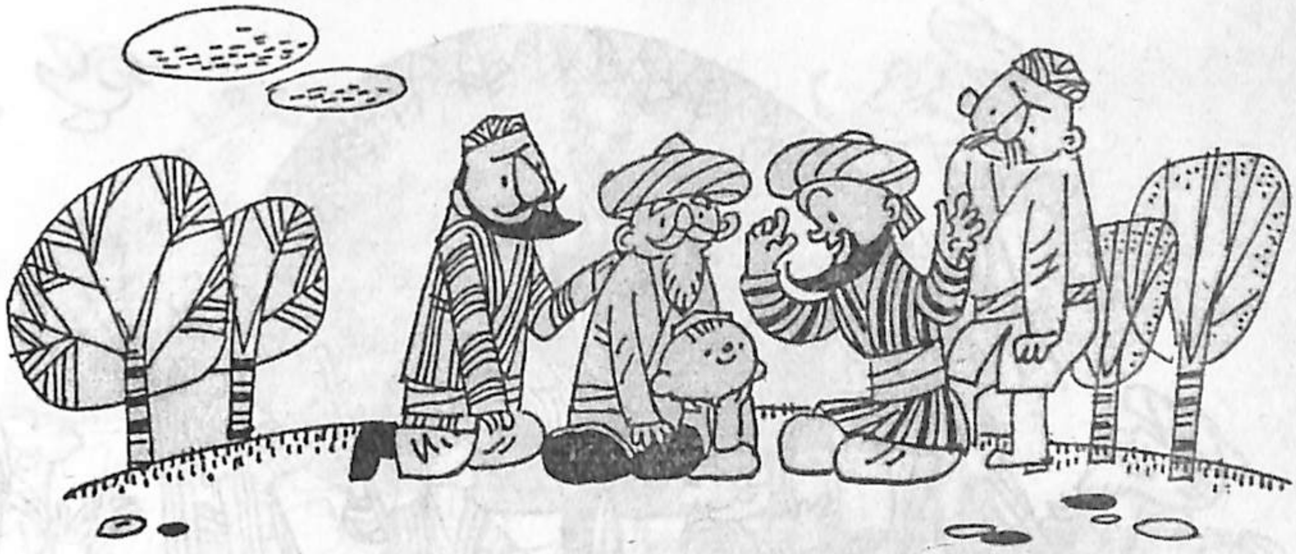


पेड़ की परछाई की खरीदी

बहुत समय पहले, एक गाँव में एक कंजूस और लालची सेठ रहता था।

सेठ के घर के सामने एक बड़ा पेड़ था। उसकी छाया सूरज और चाँद के निकलने और छिपने के साथ जगह बदलती थी। गाँव वाले और राहगीर पेड़ की छाया में आराम करना पसंद करते थे। लोगों को वहाँ बैठे देखते ही सेठ चिल्लाकर कहता कि तुम इस पेड़ की छाया में आराम नहीं कर सकते, इसकी छाया मेरी है, और सबको भगा देता।





गाँव वालों को बहुत बुरा लगता और गुस्सा भी आता। यह बात उन्होंने आफन्ती को बताई। आफन्ती को एक तरकीब सूझी।



आफन्ती दोस्तों से ख्वान (उस समय की मुद्रा) लेकर गधे पर सेठ के घर की ओर चल दिया और सेठ के पेड़ के नीचे जाकर लेट गया। सेठ ने गरजकर कहा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो? जल्दी भागो यहाँ से।"



आफन्ती ने बड़ी तहज़ीब से कहा, "जनाब, यह आम रास्ता है, मैं यहाँ आराम क्यों नहीं कर सकता?"



सेठ ने गुस्से से कहा, "ठीक है, यह आम रास्ता है, पर पेड़ की छाया मेरी है। इसके हर पत्ते की छाया की कीमत एक ख्वान है। अमीर आदमी ही यहाँ बैठ सकते हैं?"

आफन्ती ने फौरन जवाब दिया, "क्या तुम छाया बेचते हो?" सेठ ने तिरछी नज़र से देखते हुए कहा, "तुम जैसे गरीब, पेड़ की छाया नहीं खरीद सकते हैं? जल्दी भागो!"

आफन्ती ने कहा, "कितनी कीमत है?"

सेठ ने सोचा भी नहीं था कि वह सचमुच छाया खरीदना चाहता है। उसने फौरन कहा, "चार सौ ख्वान में बेचूँगा।"







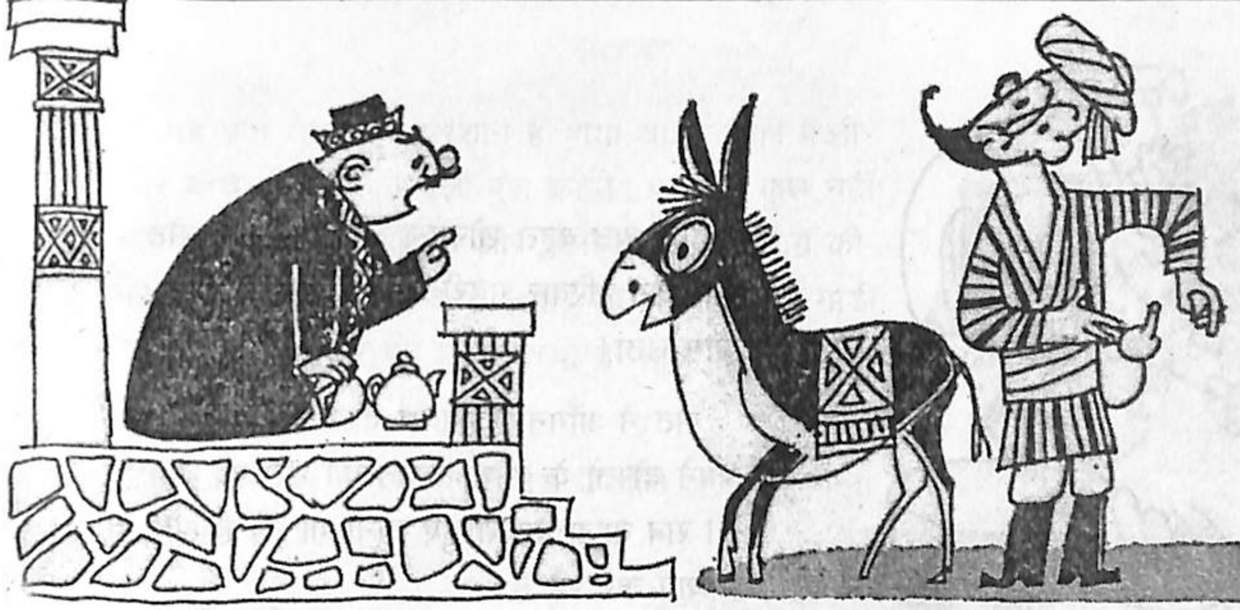
आफन्ती राज़ी हो गया। दोनों ने काज़ी के सामने ठेका किया। उसके अनुसार यह पेड़ कायम रहने तक इसकी छाया आफन्ती की हो गई और आफन्ती ने चार सौ ख्वान सेठ को दे दिए। उस दिन से गाँव वाले और राहगीर पेड़ की छाया में आराम करते, खूब मज़ा करते, गाते-बजाते थे।

एक दिन जब लोग गा-बजा रहे थे। सेठ घर से निकलकर चिल्लाया, "तुम लोग यहाँ शोर क्यों मचा रहे हो?"

आफन्ती ने मुस्कुराते हुए कहा, "सेठजी, यह छाया हमने खरीदी है। हम पेड़ की छाया का मज़ा ले रहे हैं।"

सेठ को कोई जवाब नहीं सूझा, वह आँगन में चक्कर काटने लगा।





एक दिन सेठ अपने बरामदे में आराम कर रहा था कि आफन्ती गधा हाँकते हुए आँगन में आया। सेठ आफन्ती के साथ गधा देखते ही चिल्लाने को हुआ तो आफन्ती ने कहा, "माफ कीजिए, मैं अपने पेड़ की छाया के साथ आया हूँ।"

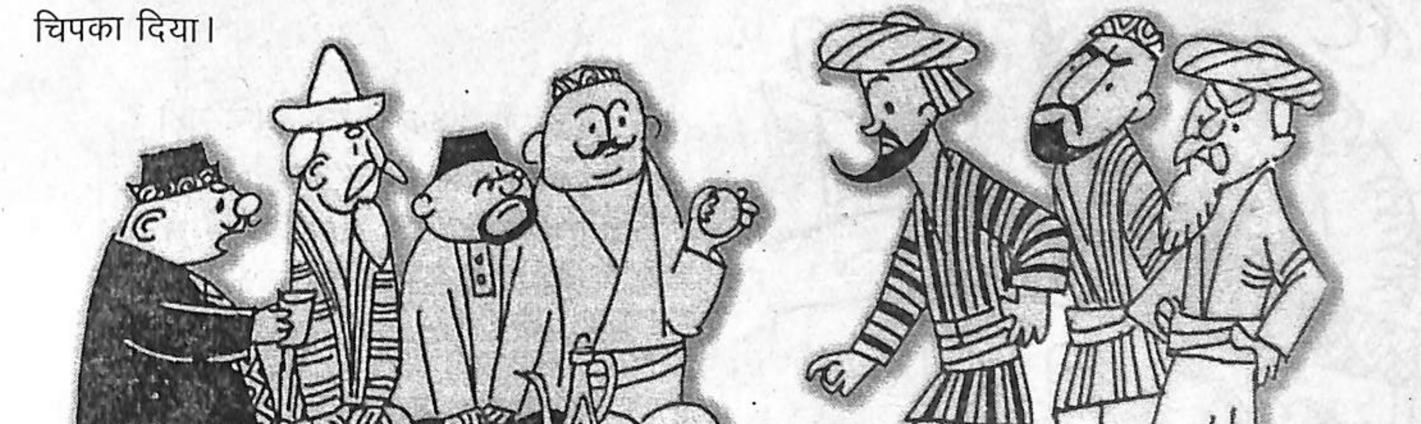


आफन्ती ने गधे को आँगन में बाँधा और वहीं लेट गया।

एक त्यौहार पर बहुत से मेहमान सेठ के यहाँ आए और कुछ आँगन में पेड़ की छाया में आराम करने के लिए बैठ गए।

अभी वे बैठ भी नहीं पाए थे कि आफन्ती कई आदमियों के साथ आया। और कहने लगा- "हमने इस पेड़ की छाया चार सौ ख्वान में खरीदी है। तुम लोग छाया का मज़ा लूटना चाहते हो? भागो यहाँ से?" मेहमानों को जाना पड़ा।

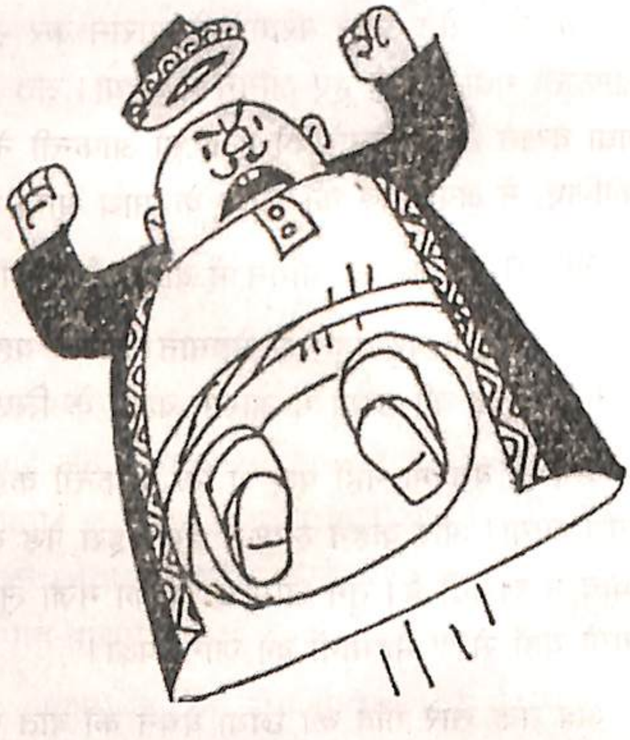
अब तक सारे गाँव को छाया बेचने की बात पता चल चुकी थी। लोगों ने एक व्यंग्य गीत लिखकर सेठ की दीवार पर चिपका दिया।





एक रात बहुत शोरगुल की आवाज़ से सेठ का सारा परिवार गहरी नींद से अचानक जाग उठा।

सेठ ने आँगन में आकर देखा कि आफन्ती अपने दोस्तों के साथ मकान की छत पर बैठा है। सब बाजा बजाते हुए गाना गा रहे हैं और गपशप कर रहे हैं।



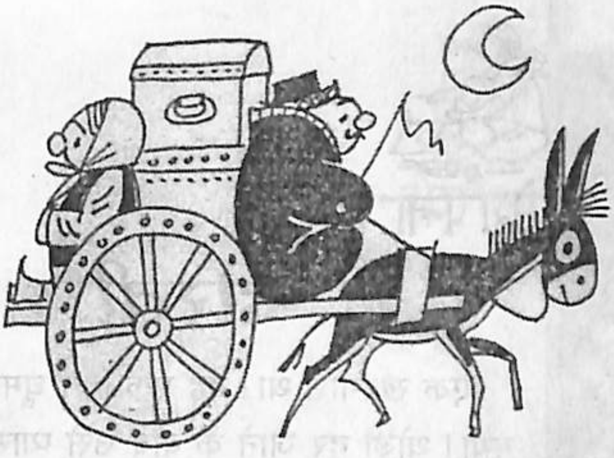
सेठ गुस्से से आगबबूला हो रहा था। आफन्ती ने उसे देखकर बड़ी विनम्रता से कहा, "माफ कीजिए, हम अपनी छाया में बाजा बजा और गाना गा रहे हैं। कोई दूसरा आदमी नहीं है। आप अपने घर में आराम करें।"

सेठ गुस्से से काँपते हुए बोला, "मैंने चाँदनी में छाया तुम्हें नहीं बेची?"

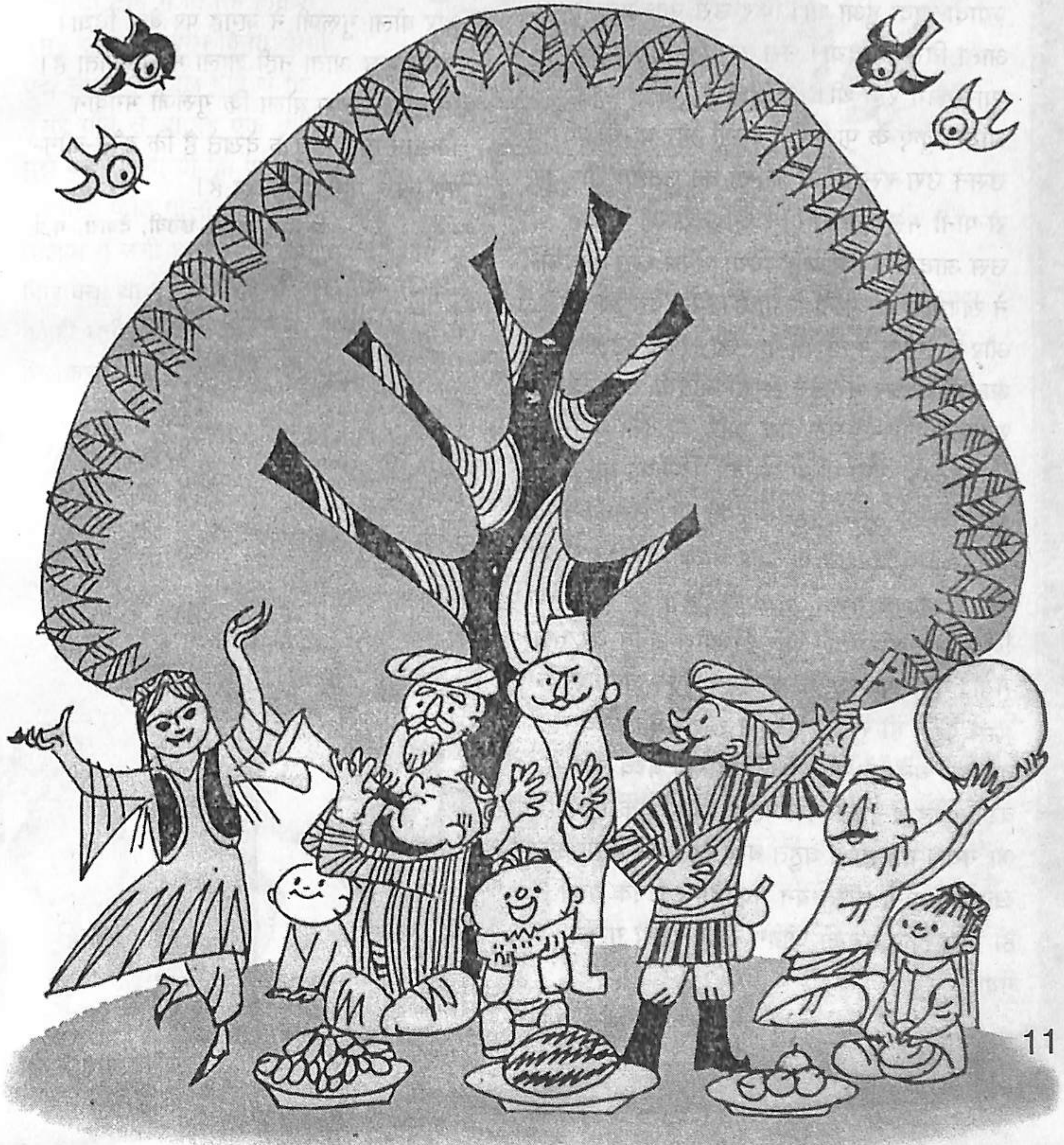


सेठ जी, "ठेके में यह स्पष्ट नहीं है कि आपने किस समय और कहाँ की छाया बेची है। आप जाकर ध्यान से ठेके को देखें। उसमें सिर्फ छाया बेचने का ज़िक्र है।" यह कहकर आफन्ती फिर दोस्तों के साथ बजाने-गाने लगा।

अब तक सेठ बहुत परेशान हो गया था। उसकी पत्नी और बच्चे भी सेठ को भला-बुरा कहते। पर सेठ कुछ नहीं कह पाता। जितना सोचता और उलझता जाता। आगे की परेशानी सोच कर सेठ डरने लगा। सो अगली सुबह गाड़ी पर सामान लादकर वह पत्नी-बच्चों के साथ कहीं दूर चला गया।



सेठ के जाते ही सारे लोग पेड़ के नीचे आकर मौज़-मस्ती करने लगे।



दोस्ती

एक खरगोश था। वह एक दिन घूमने निकल गया। थोड़ी दूर जाने के बाद उसे प्यास लगी। पास में एक कुँआ दिखाई दिया। वह कुआँ बहुत ज़्यादा खुदा हुआ था। फिर उसे एक आदमी आता दिखाई दिया। उस आदमी को भी बहुत प्यास लग रही थी। वह आदमी कुएँ के पास आया। कुएँ के पास एक रस्सी और बाल्टी थी। उसने उस रस्सी और बाल्टी को उठाया और कुएँ से पानी भरने लगा। फिर जो खरगोश था वह उस आदमी को दिखाई दिया। फिर उस आदमी ने खरगोश को पानी पिलाया। फिर वह आदमी और खरगोश ने दोस्ती कर ली। फिर वह खरगोश आदमी के घर में रहने लगा। आदमी रोज़ उस खरगोश को नई-नई चीज़ें खाने को देता था।

फिर जो आदमी था उसकी पत्नी थी वह जो खरगोश था उससे बहुत जलती थी। उसकी पत्नी ने खरगोश के खाने में जहर मिला दिया। वहीं पर एक हिरण आ गया। उसने खरगोश का खाना खा लिया और मर गया। फिर खरगोश अपने घर चला गया। वहाँ खरगोश के बच्चे हो गए। खरगोश के बच्चे बहुत ही सुन्दर थे। जो छोटे-छोटे बच्चे थे वह अब बड़े हो गए। फिर वह सब बच्चे एक बड़ा झुण्ड बनाकर चल रहे थे। वहाँ एक हाथी आ गया। वह हाथी बहुत बड़ा था। वह हाथी और खरगोश दोनों दोस्त बन गए। फिर उनके बच्चे हो गए। फिर उनका जीवन खुशी-खुशी गुज़र गया।

- नवीन कुमार छलौत्रे, देवास, म.प्र.

बिजली क्यों चमकती

गुरूजी ने बच्चों से कहा कि पानी गिरता है तो बिजली क्यों चमकती है। कक्षा में दो बच्चे बैठे थे। गुरूजी ने पहले बच्चे से पूछा- बता तुझे पता है? बच्चा बोला- गुरूजी आप मारोगे। गुरूजी ने बोला- बैठ जा। उसने दो बार बोला गुरूजी ने जगह पर बैठा दिया। उल्लू कुछ आता नहीं शाला में आ जाता है।

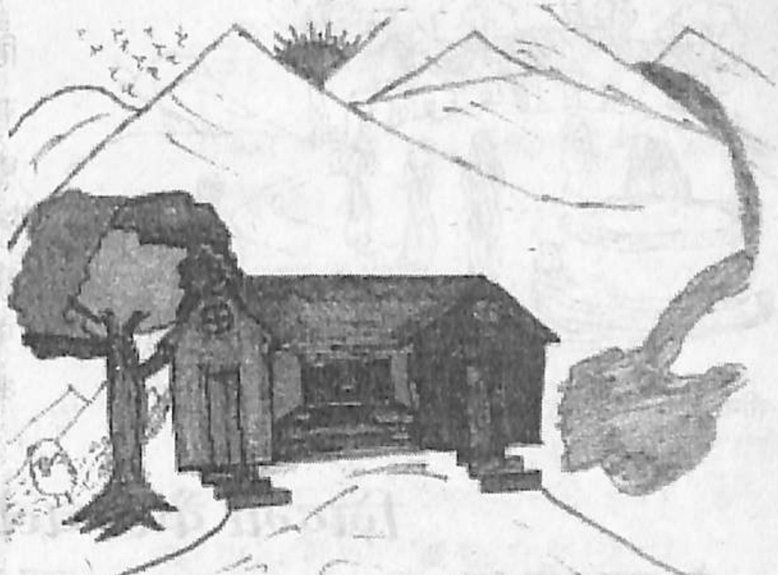
दूसरा बच्चा बोला कि गुरूजी भगवान किसान टार्च मार के देखते हैं कि कौन-कौन-सी जगह पानी गिर रहा है।

- अनुराग यादव, छठवी, देवास, म.प्र.



- प्रियंका पाण्डे, छठवीं

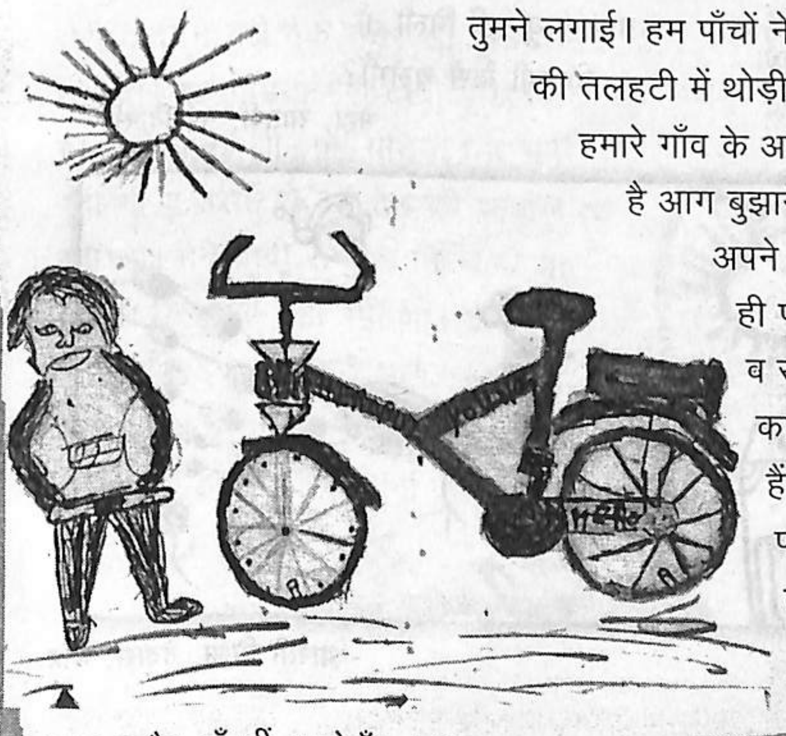
आग



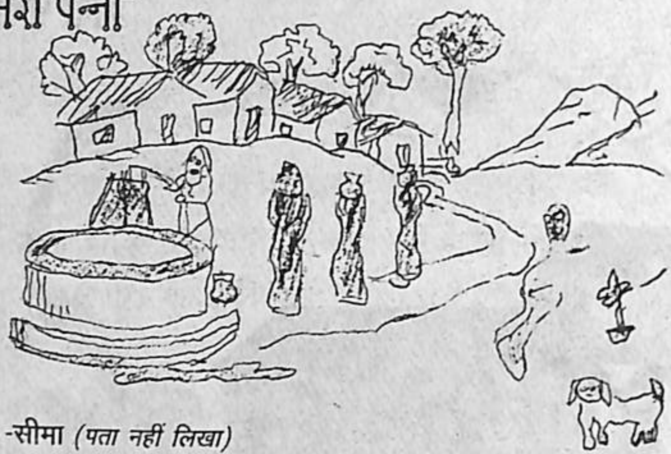
- आशीष परमार, दसवीं, खातेगाँव, म.प्र.

दिसम्बर की 24 तारीख की एक विचित्र घटना है। दिन के करीब तीन बजे हम सभी साथी क्रिकेट खेलने का निर्णय कर मैदान में गए। दो टीम में विभक्त होकर हमने खेलना प्रारम्भ किया, अभी एक घण्टा ही खेल पाए थे कि दूसरे गाँव से आ रहे एक व्यक्ति ने मुझे यह सूचना दी कि पास की अरावली पर्वत माला के पास बने बड़े तालाब में उगी घास में आग फैल रही है। फिर क्या था हम सभी खिलाड़ी दौड़कर तालाब की बनी पाल पर पहुँचे। तालाब सूखा था तथा घास काफी घनी थी। आग ने एक भयानक रूप धारण कर लिया था, हवा भी चल रही थी। हम सभी ने मिलकर विचार किया कि यदि आग को नहीं बुझाया गया तो पास के गाँव के बाहर रखा चारा जल सकता है। हो सकता है कि आग अरावली की पहाड़ियों में उगी घास में चली जाए। साहस करके मैं, आनन्द, विनोद, छोटू, दशरथ आग को बुझाने गए। सुरेन्द्र व राममनोहर ने यह कहकर टाल दिया कि अपना नाम हो जाए कि आग तुमने लगाई। हम पाँचों ने आग को किसी तरह बुझाई। परन्तु पर्वत की तलहटी में थोड़ी-सी लग रही आग को बुझाने पहुँचे तो हमारे गाँव के आदमी ने रोक दिया कि तुमको क्या मतलब है आग बुझाने की। उसे यह कहकर समझाया कि यह अपने ही गाँव का चारागाह है उसमें अपने गाँव के ही पशु चरते हैं। जलती आग को बुझाकर सुरेन्द्र व राममनोहर के पास पहुँच कर हम पाँचों ने कायर हैं कायर हैं सुरेन्द्र व राममनोहर कायर हैं के नारे लगाए। वे दोनों शर्म के मारे पानी-पानी हो गए तथा बहुत पछताए। क्योंकि वे दोनों हमारे साथ होते तो काफी चारा जलने से बच जाता।

- महेन्द्र कुमार, अजमेर, राजस्थान



- रजत राठौर, पाँचवीं, खातेगाँव, म.प्र.



-सीमा *(पता नहीं लिखा)*

दुर्घटना

एक जीप जा रही थी। शंकरनिवास से हिरन जा रहे थे। हिरन नाला के पास आ रहा था। जीपवाला नहीं देख पाया उसने धक्का लगा दिया। एक हिरन दब गया। जीप पलट गई। एक हिरन को चोट लग गई। हिरन खेत में भाग गया। उसके पेट में से दो बच्चे निकल गए हिरन मर गया और उसके बच्चे मर गए।

-पुष्पा कुमारी, तीसरी, फ़ैज़ाबाद

ज़िंदगी कैसे चलेगी

पेड़ सहकर धूप खुद,
देते सभी को छाँह अपनी
मदद करने को बढ़ाते,
डालियों सी बाँह अपनी।

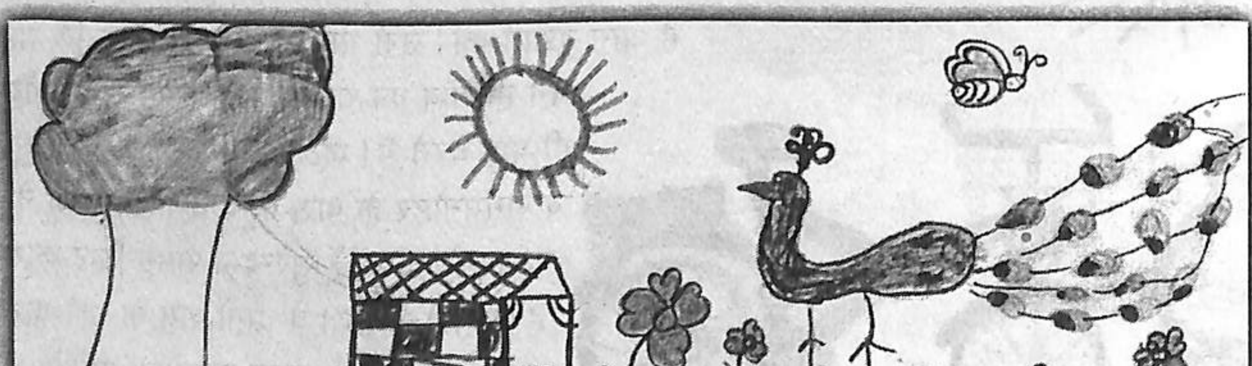
खींचते रहते निरंतर,
ये हवा गंदी हमारी।
है, हमें मिलती इन्हीं से,
प्राण वायु विशुद्ध सारी,

सींचते धरती हमारी,
बादलों को भी बुलाते।
जल बरसता, खेत उपवन,
वन सभी हैं लहलहाते।

जाएँ उनको काटते ही,
तो मिलेगी छाँह कैसी?
मदद करने को बढ़ेगी
डालियों की बाँह कैसी?

और लेते साँस भी फिर,
प्राण-वायु कहाँ मिलेगी
प्राण-वायु नहीं मिली तो
ज़िंदगी कैसे चलेगी?

नेहा, सातवीं, नई दिल्ली



- भारती मिश्रा, देवास, म.प्र.

मैं बनी महाराणी

मैं और अंकिता दोनों पक्की सहेलियाँ हैं। हम महाराणी होते तो..!

मुझे लगा मैं अजीब दुनिया में थी। वहाँ कुछ अजीब था। वहाँ बड़ी ऊँचाई पर एक आसन था। उसी के पास दूसरा आसन था जहाँ मैंने अंकिता को देखा। दो-तीन आदमी आए और मुझे उस पर बिठाया। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। तभी सब एक साथ पुकारने लगे महाराणी की जय..!

मैं कुछ सोचूँ उससे पहले मेरी अम्मा मुझे जगा रही थीं। तभी मुझे पता चला कि यह एक स्वप्न था।

- प्रिया पट्र्स, पादरा, बड़ौदा, गुजरात



- मृणाल वर्मा, दुर्गाभवन, अल्मोड़ा, उत्तरांचल

सुंदर सी गुड़िया

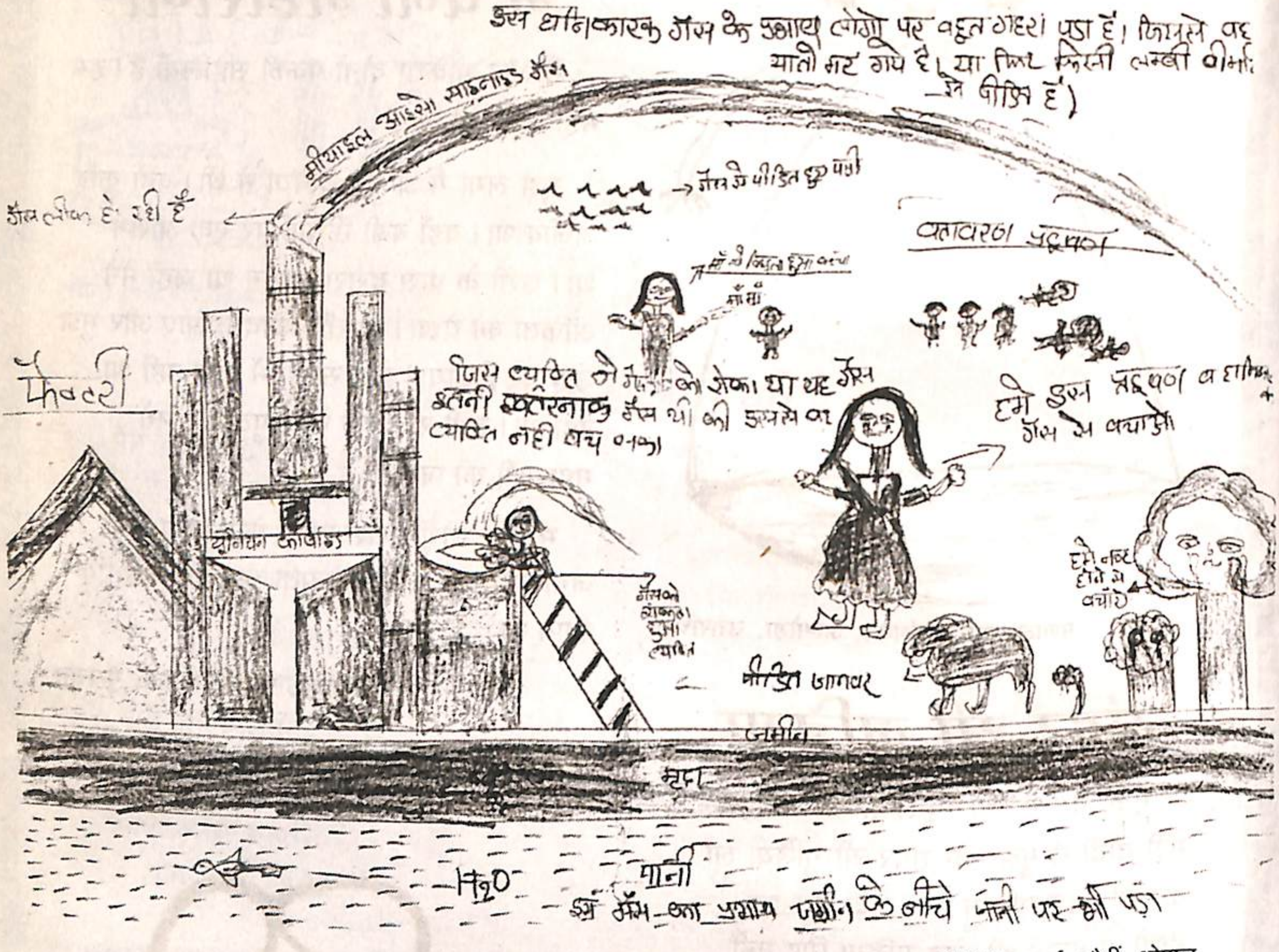
एक दिन मैं जब स्कूल से घर आई। मेरी दादी ने मुझे एक सुंदर सी गुड़िया ला कर दी। वह गुड़िया मेरी दादी ने अपने हाथों से बनाई थी। वह गुड़िया गिर नहीं रही थी व उसमें से टन-टन की आवाज़ आ रही थी। मैंने दादी से पूछा कि दादी यह गुड़िया गिर क्यों नहीं रही थी। दादी ने बताया कि इसका ऊपरी भाग हल्का और नीचे का भाग गोल व भारी है इसके कारण वह ऊपरी डगमगाकर अपनी जगह पर आ जा रही है।

- मृणाल वर्मा, दुर्गाभवन, अल्मोड़ा, उत्तरांचल



- प्रीति अरोरा, खातेगाँव, म.प्र.

15 अक्टूबर, 2004 को पुराने भोपाल में सम्भावना ट्रस्ट ने बच्चों की एक चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की। सम्भावना ट्रस्ट पिछले आठ सालों से गैस पीड़ितों को मुफ्त इलाज़ मुहैया कराती आई है।



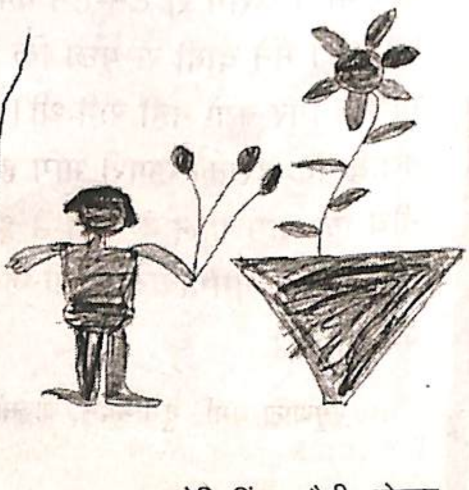
- कीर्ति विश्वकर्मा, नौवीं, भोपाल



- प्रिया वागला, पाँचवी, भोपाल



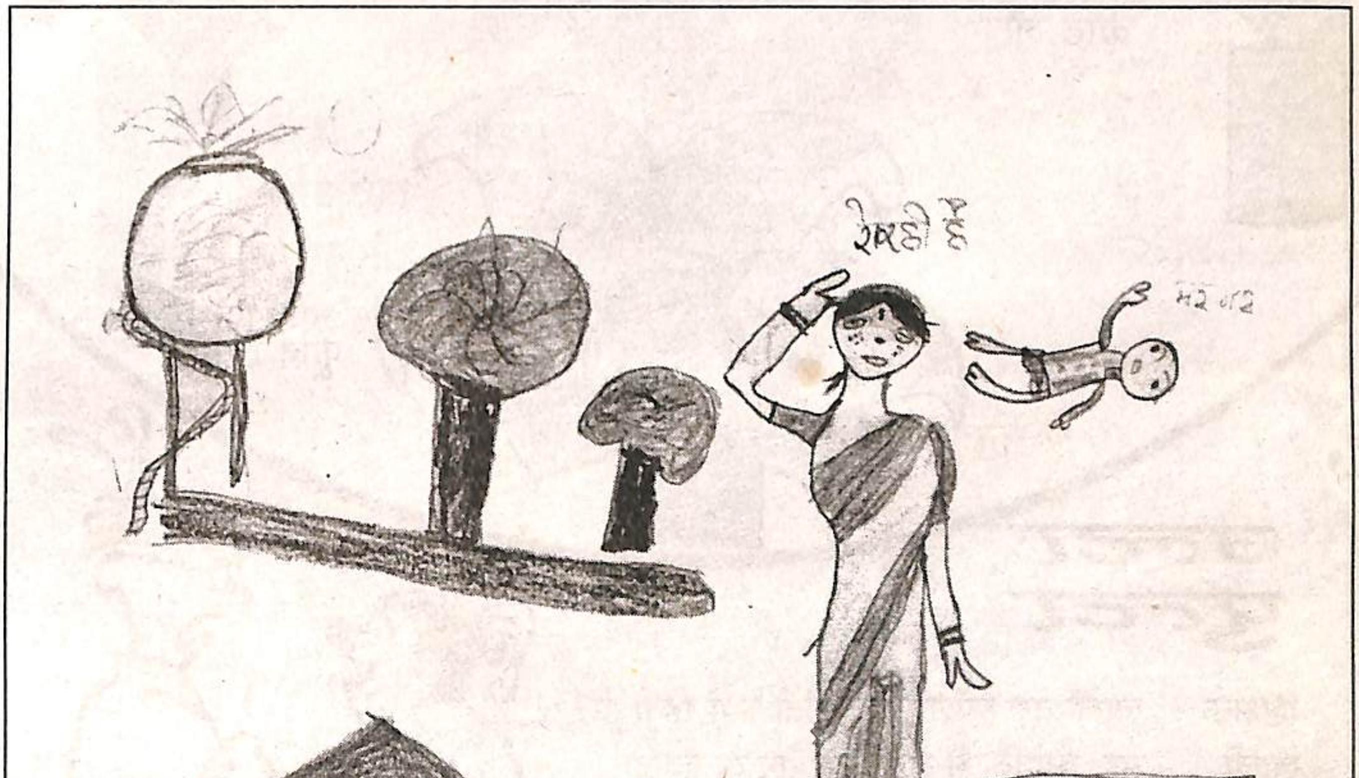
- जयमनी 6 वर्ष, भोपाल



- ज्योति सिंह, चौथी, भोपाल



-आकाशदीप कुशवाह, आठवीं, भोपाल



- मजीद खाँ, आठवीं, भोपाल

तुम भी बनाओ



1. एक रंग–बिरंगा आयताकार कागज़ लो।

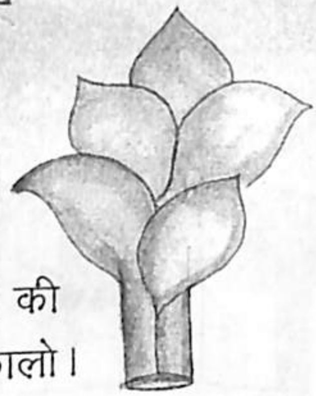
फूल



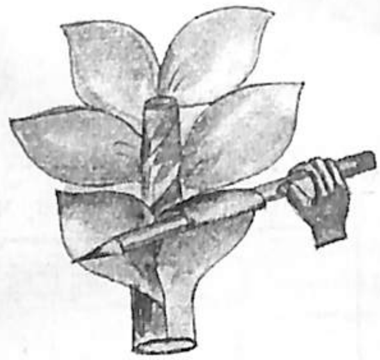
2. उसे लपेटकर इस तरह गोल कर लो।



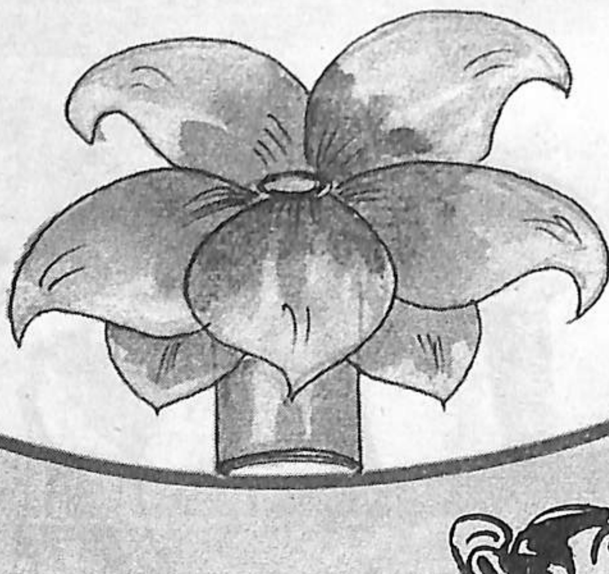
3. कैंची से इस तरह काट लो।



4. गोल घुमाते हुए ऊपर की तरफ धीरे–धीरे निकालो।



5. पँखुड़ियों को पेंसिल से नीचे की ओर इस तरह घुमाओ।



फूल तैयार!

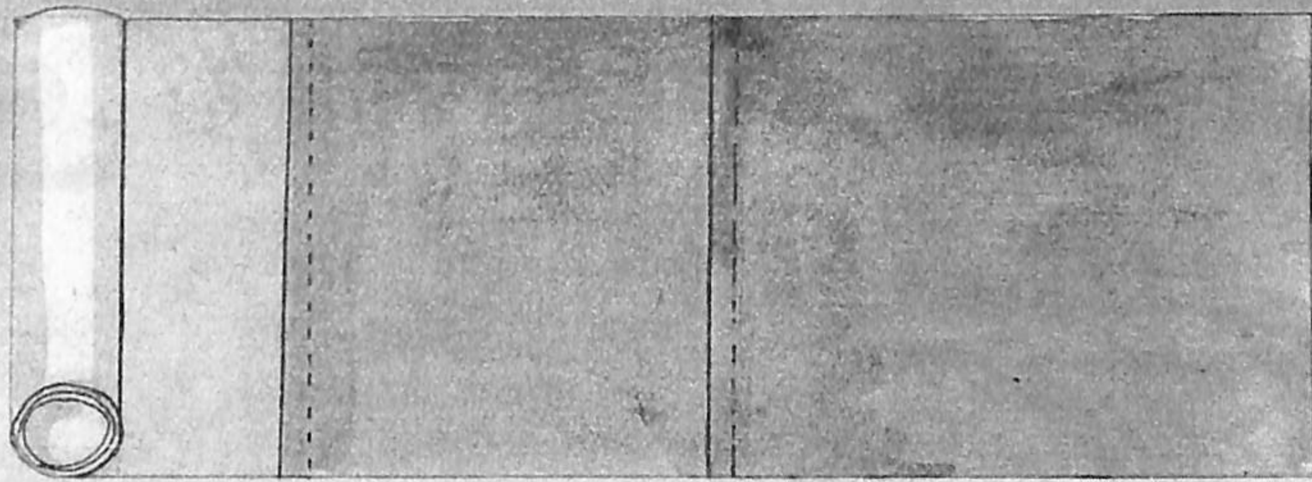


उल्टा पुल्टा



शिक्षक - लाली तुम हमेशा इतनी गंदी क्यों रहती हो?

लाली - सर, क्योंकि मैं आपसे ज़मीन के ज़्यादा करीब हूँ।



1. एक रंग–बिरंगा कागज़ लो।

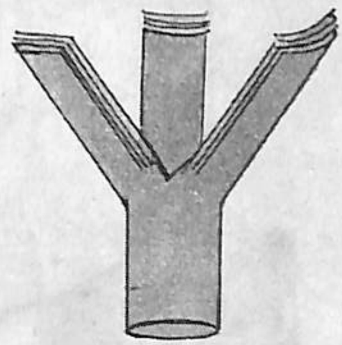
पेड़



2. उसे लपेटकर इस तरह गोल कर लो।



3. कैंची से इस तरह तीन तरफ से काट लो।



3. गोल घुमाते हुए ऊपर की तरफ धीरे–धीरे निकालो।



पेड़ तैयार!



राजू - पापा, क्या आप अँधेरे में लिख सकते है

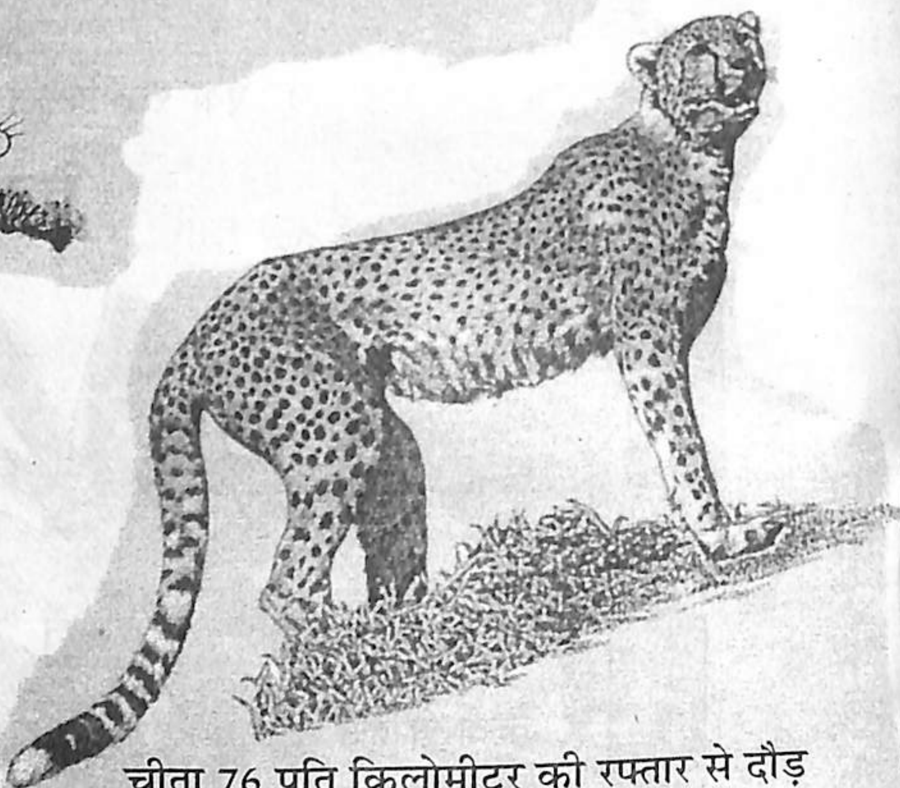
पिता - बिल्कुल!

राजू - तो फिर अँधेरे में मेरे रिपोर्ट कार्ड पर दस्तख्त करके बताइए।

क्या आप जानते हैं?



अपना सिर घुमाए बिना पीछे देख
सकने वाले केवल २ जीव हैं -
खरगोश और तोता

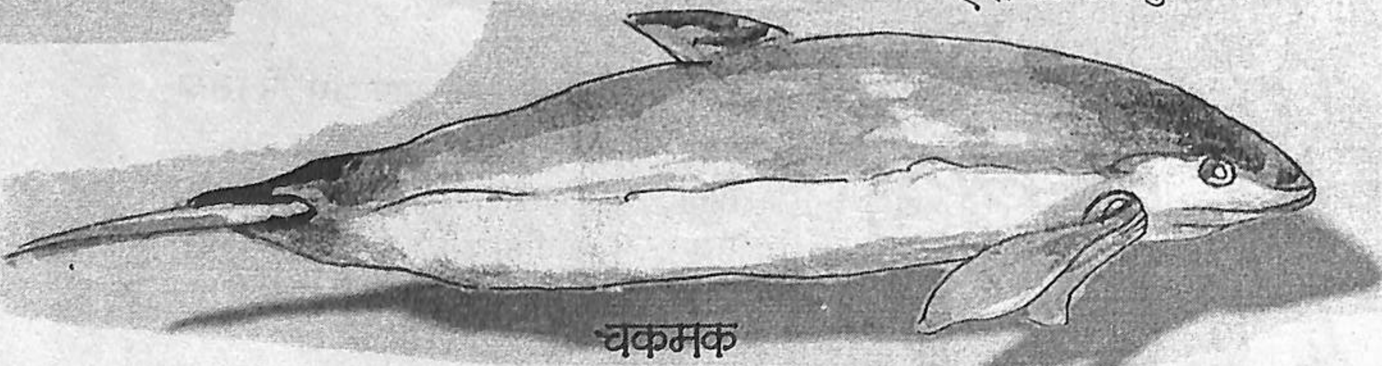


चीता 76 प्रति किलोमीटर की रफ्तार से दौड़ सकता है पर हाँ चीता शेर की तरह दहाड़ता नहीं है बिल्ली के माफिक मिमियाता है।



जन्म के समय जायण्ट पाण्डा चूहे से भी छोटा होता है और उसका वज़न लगभग चार ओंस होता है।

सोते समय डॉल्फिन की
एक आँख खुली रहती है।

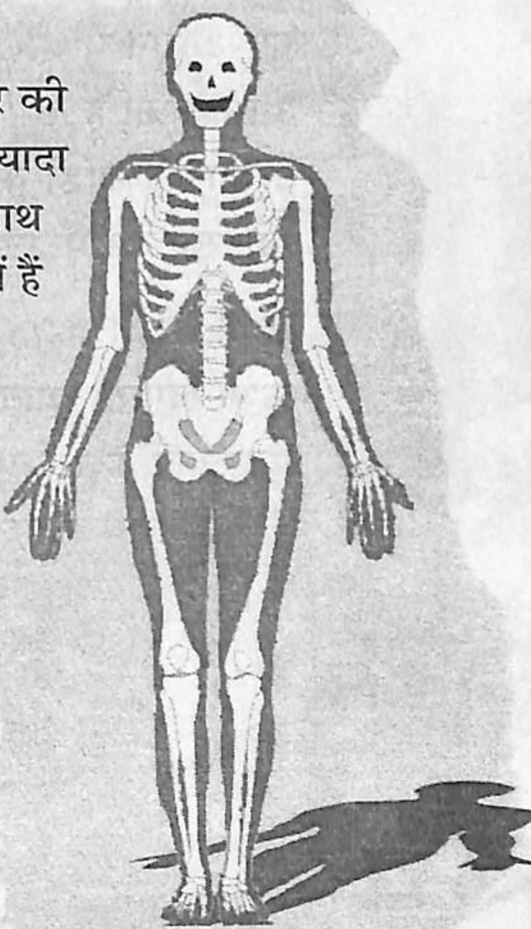




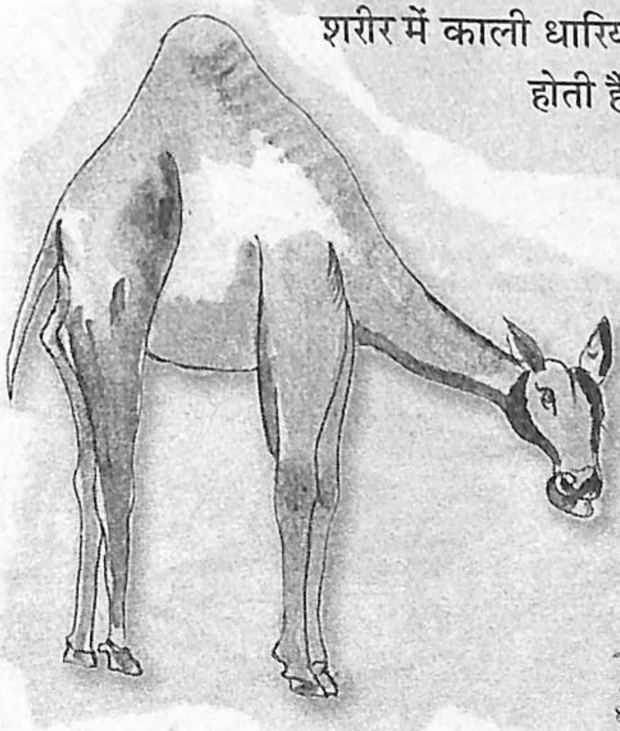
गिरगिट की जीभ उसके शरीर से दुगुनी लम्बी होती है।



हमारे शरीर की आधी से ज़्यादा हड्डियाँ हाथ और पैरों में हैं



ज़ेब्रा सफेद रंग का होता है और उसके शरीर में काली धारियाँ होती हैं।



ऊँट की तुलना में चूहा ज़्यादा दिनों तक बिना पानी के रह सकता है।



- सभी चित्र - अशोक चंचल

गिलहरी

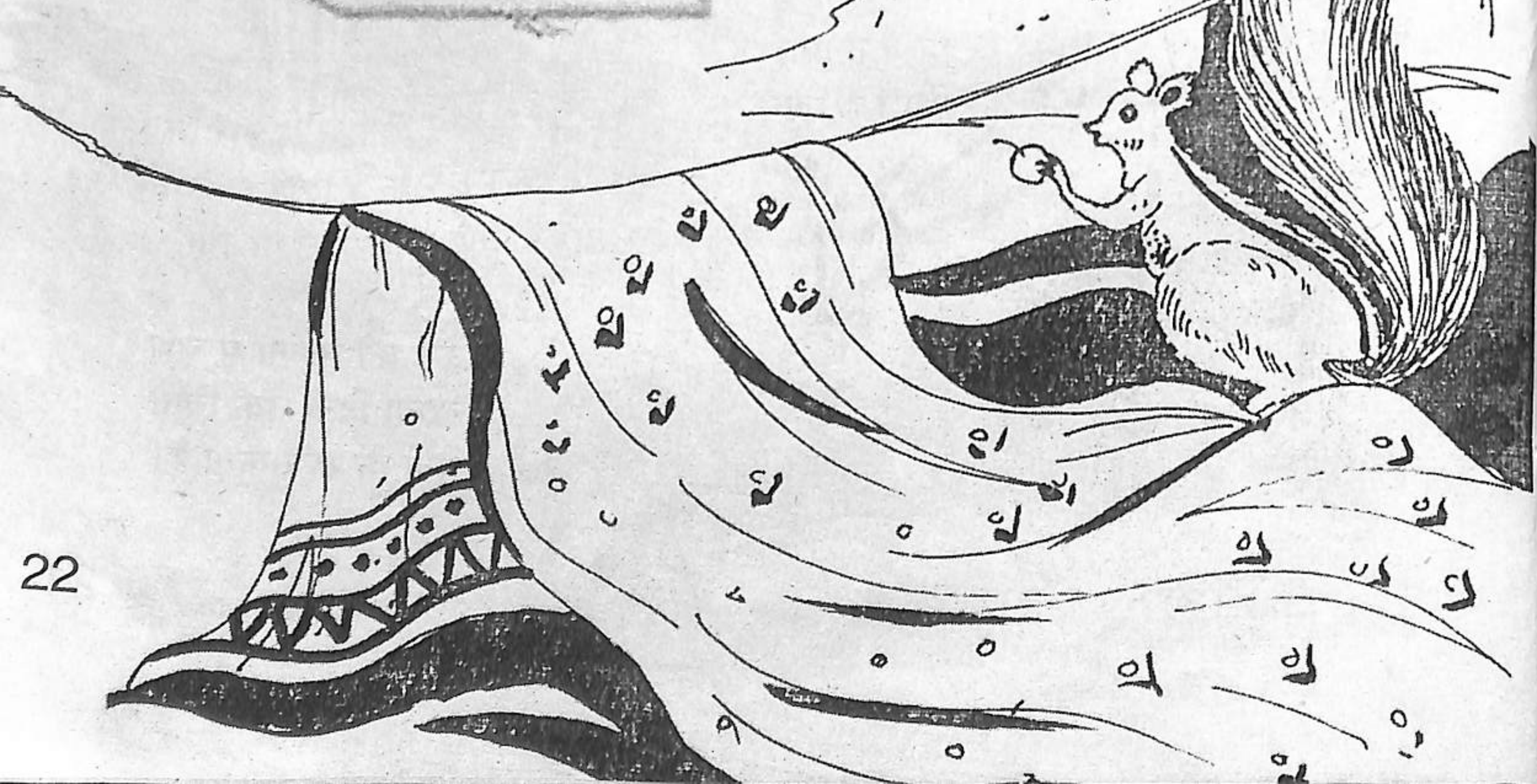
खाती जामुन आम गिलहरी
नन्हीं-सी नादान गिलहरी
काली पट्टी लिए पीठ पर
फुदक रही शैतान गिलहरी।

घर-आँगन में धूम मचाती
आफत का है नाम गिलहरी
अम्मा की साड़ी को समझे
खो-खो का मैदान गिलहरी।

कभी बैठती यह ज्ञानी-सी
कभी लगाती ध्यान गिलहरी
सुंदर नन्हीं प्यारी-प्यारी
कितनी चतुर सुजान गिलहरी।

-रामकुमार जैन राजन
चित्र- उदय खरे

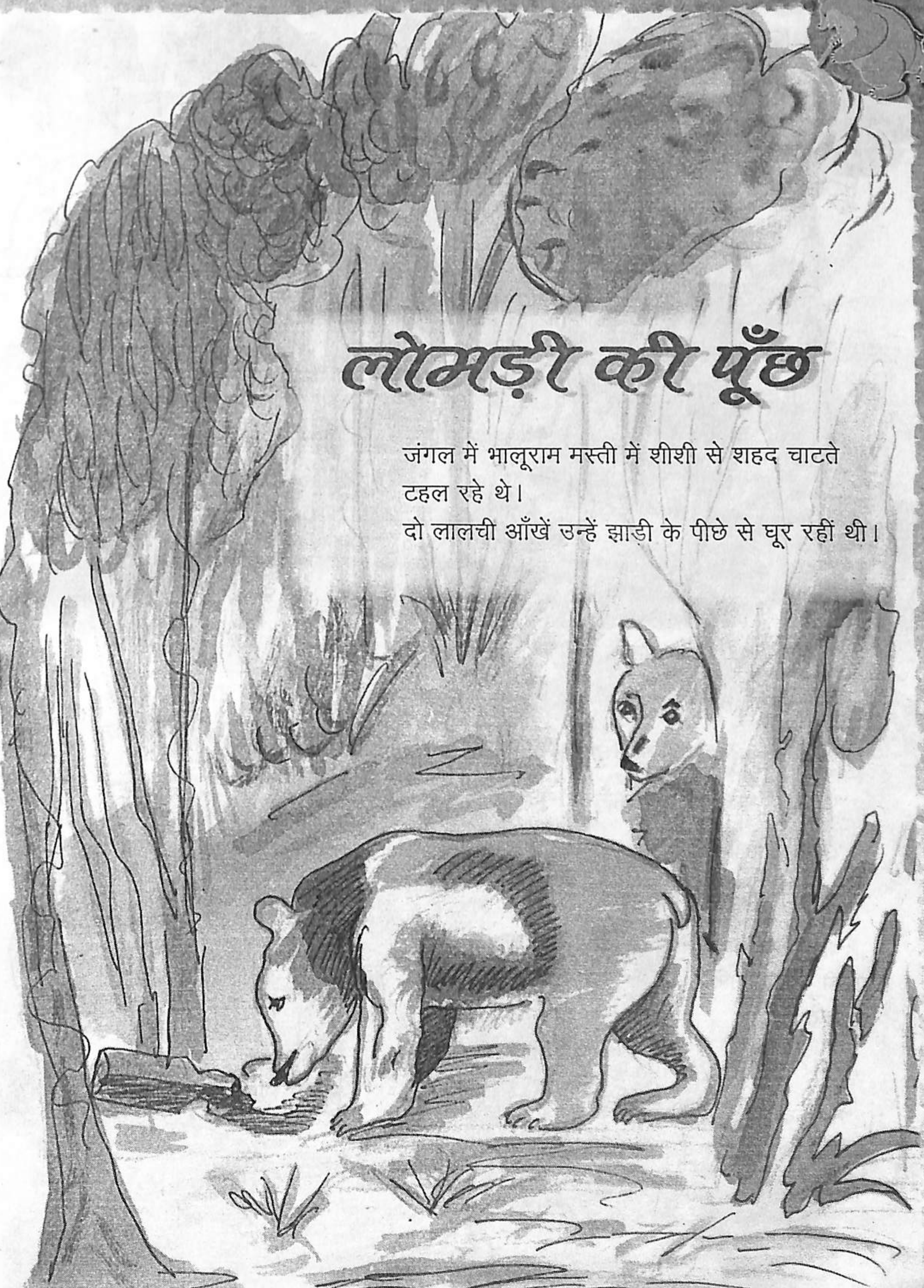


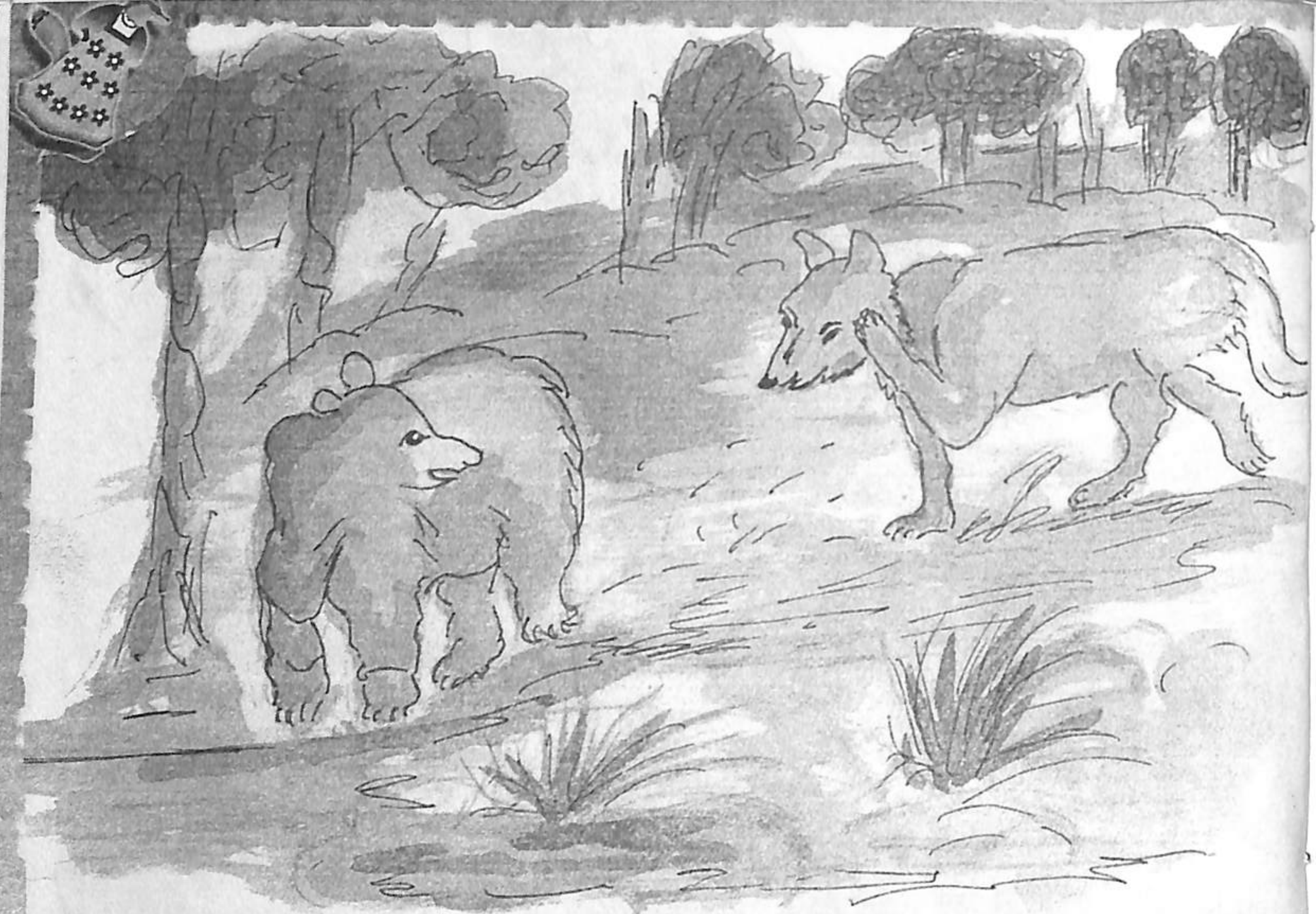


लोमड़ी की पूँछ

जंगल में भालूराम मस्ती में शीशी से शहद चाटते टहल रहे थे।

दो लालची आँखें उन्हें झाड़ी के पीछे से घूर रहीं थी।





"सलाम! पिद्दी पूँछ।" लोमड़ी बोली।

"क्या कहा?" भालू बोला।

"पिद्दी पूँछ..." लोमड़ी बोली, "तुम्हारे पीठ पीछे सभी लोग तुम्हें यही तो कहते हैं।"

"ऐसा...?" भालू ने दाँत किसमिसाते पूछा।

"हमेशा ..." लोमड़ी ने कहा। "क्योंकि तुम्हारी पूँछ नहीं है।"

"है तो..." भालू ने सफाई दी।

"बाकी सबकी पूँछ तो तुमसे अच्छी है।" लोमड़ी बोली। "लेकिन तुम भी सुन्दर पूँछ ले सकते हो।"

"सच?" भालू ने पूछा।

"मैं शहद की आधी शीशी के बदले अपनी सुन्दर बालदार पूँछ दे सकती हूँ।" लोमड़ी ने कहा।



"लेकिन मैं तुम्हारी पूँछ कैसे ले जा सकता हूँ" भालू ने पूछा।

"ले जाना जरुरी नहीं है। मैं तुम्हारे लिए इसे रखे रहूँगी..." लोमड़ी बोली।

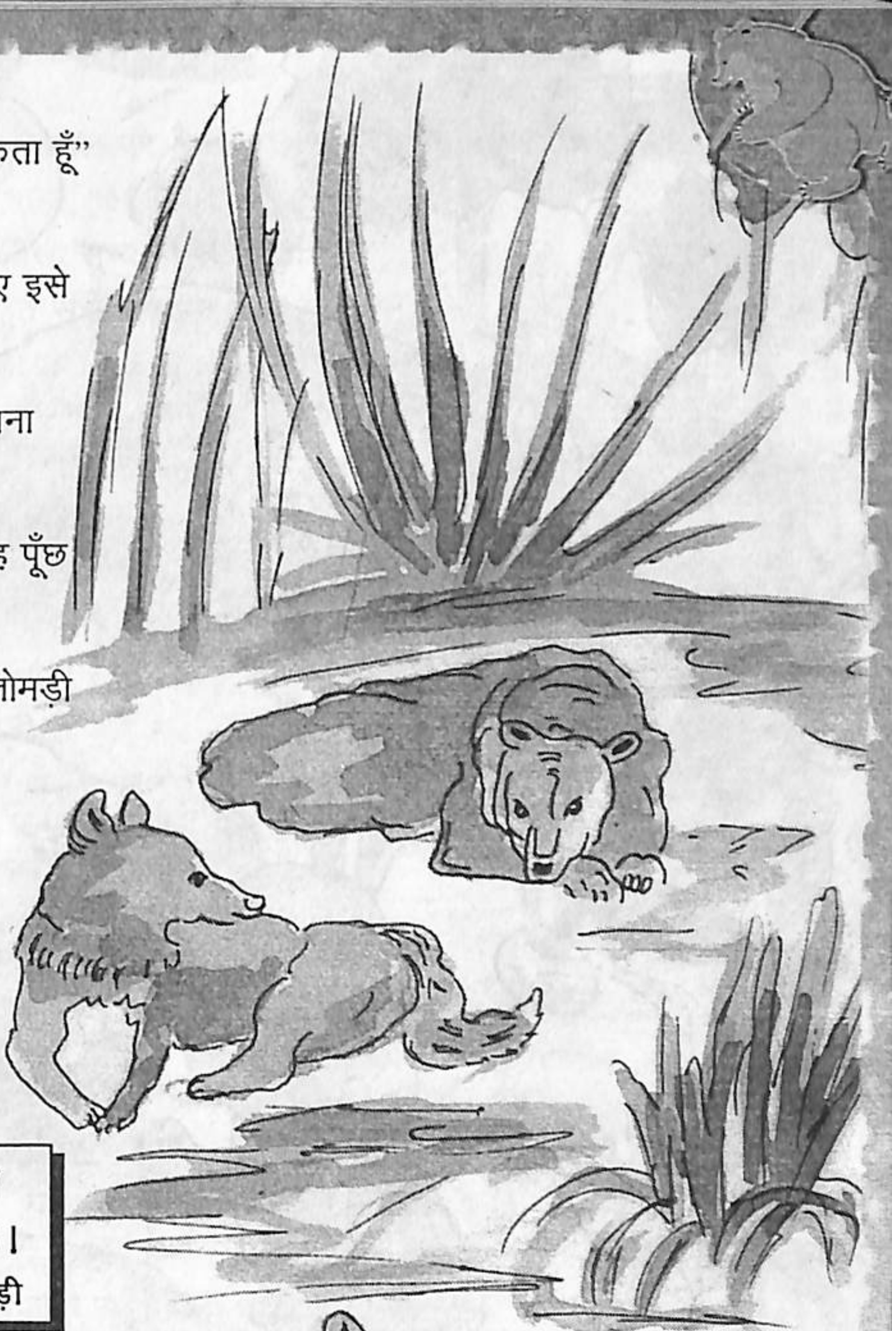
"तुम तो देख ही रहे हो कि मैं इसे कितना सँभाल कर रखती हूँ।"

"लेकिन सबको कैसे पता चलेगा कि यह पूँछ मेरी है?" भालू बोला।

"मैं इस पर एक साइन लटका दूँगी।" लोमड़ी ने कहा।

"अगर तुम मेरे इर्द–गिर्द न होगी तो?" भालू ने पूछा।

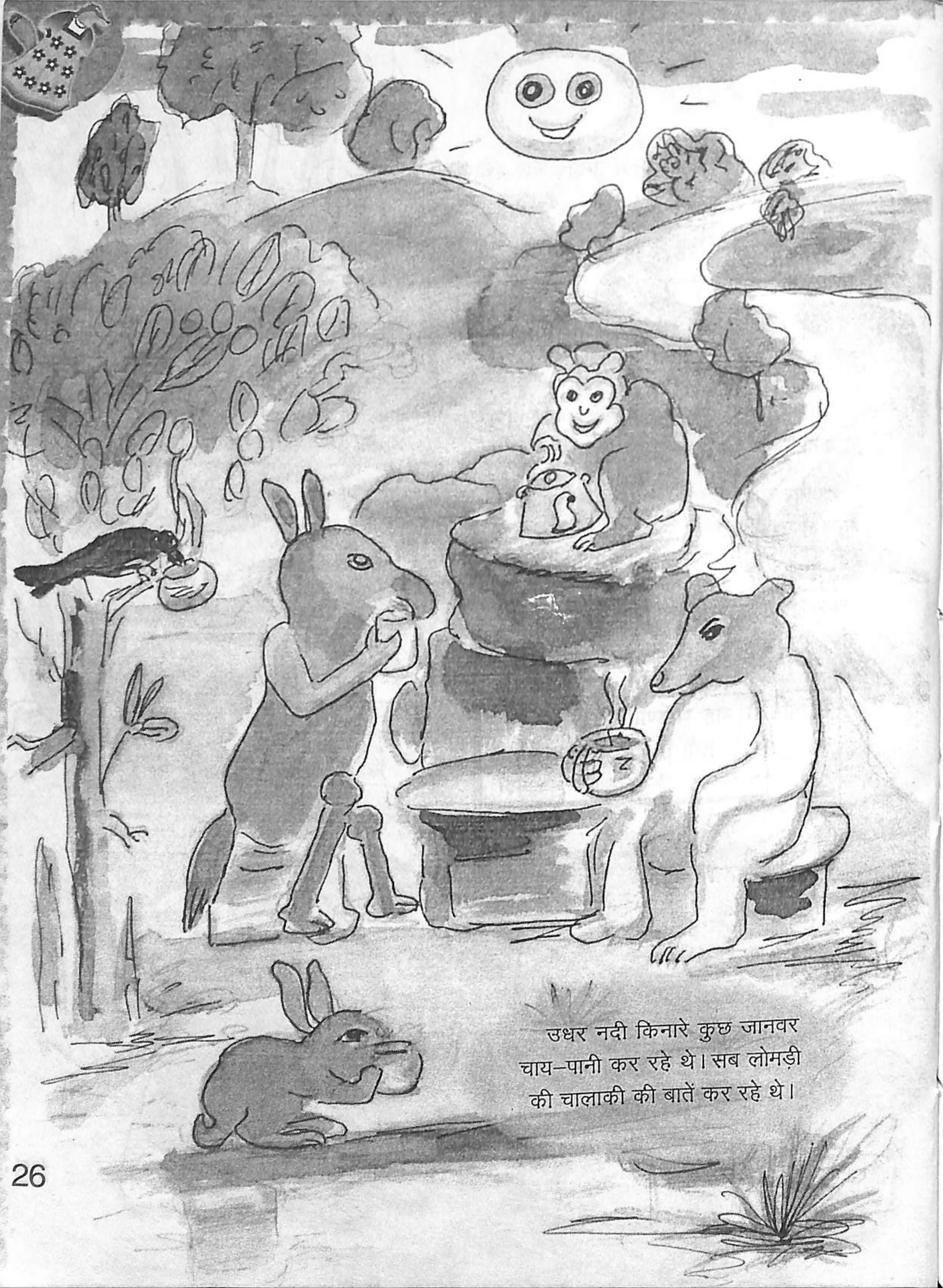
"मैं तुम्हें लिखकर दे दूँगी एक घोषणा–पत्र – एक वादा, नहीं तो शहद वापस" लोमड़ी ने कहा।



मैं लोमड़ी, यह घोषणा करती हूँ कि जो पूँछ मेरे लगी है वह भालू की है।

हस्ताक्षर – लोमड़ी





उधर नदी किनारे कुछ जानवर
चाय–पानी कर रहे थे। सब लोमड़ी
की चालाकी की बातें कर रहे थे।





"एक दिन मैं डाल पर बैठा कुछ खा रहा था।" कौए ने कहा, "लोमड़ी ठहरी और कहने लगी, तुम्हारे जैसी सुन्दर चिड़िया की तो आवाज़ भी बहुत सुरीली होगी। मैंने गाना सुनाने के लिए ज्यों ही मुँह खोला, पनीर का टुकड़ा गिर गया। लोमड़ी ने पनीर उठाया और चम्पत हो गई। यही नहीं उसने जाते–जाते यह भी कहा कि मैं बेसुरा गाता हूँ।"

खरगोश बोला, "मेरे पेट में तो अभी भी उन खट्टे अंगूरों के खाने से दर्द हो रहा है जो लोमड़ी ने मुझे मेरे मीठे अंगूरों के बदले में दिए थे। उसने मुझसे कहा कि खट्टे अंगूरों में विटामिन सी बहुत होता है। बहुत फायदे की चीज़ है।"

गधे ने भी आपबीती सुनाई ... "मैं उस दिन अखरोट बीन रहा था। लोमड़ी आई और मदद करने लगी। जब काम पूरा हो गया तो बोली, तुम मुझसे बड़े हो इसलिए तुम्हें बड़ा हिस्सा मिलना चाहिए। उसने मुझे भारी गठरी दे दी। गठरी को जब घर लाकर खोला तो देखा उसमें ढेर सारे पत्थर।"

तभी भालूराम आ पहुँचे।

"अब तुम लोगों को मेरा मज़ाक उड़ाने की ज़रूरत नहीं है। मेरे भी बहुत सुन्दर पूँछ है।" भालू ने बड़े रौब से कहा।

"ऐ.. तुम्हारा कौन मज़ाक उड़ाता है? और कैसी पूँछ?" जानवरों ने पूछा।

भालू ने लोमड़ी का लिखा कागज़ दिखाया।

"आपका भी मंडली में स्वागत है.." गधे ने कहा, "उसने तुमसे क्या ठगा?"

"मेरा शहद" भालू बोला।





“अब तुम इस कागज़ को अपनी दुम पर चिपका लो बड़े भाई और दिखाते घूमो। तुम समझते हो कि लोमड़ी तुम्हें पूँछ देगी?” खरगोश ने कहा।

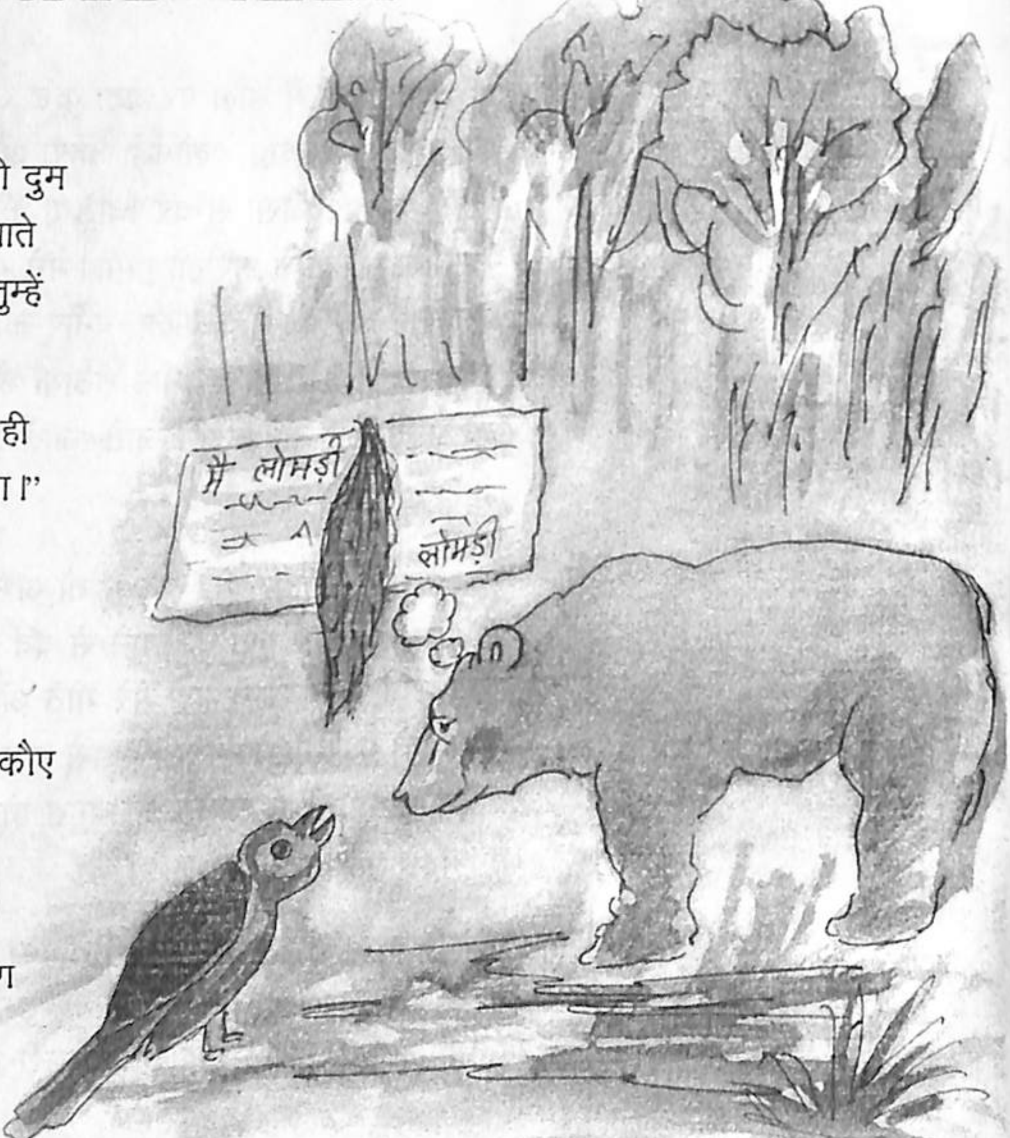
“अब लोमड़ी का इलाज करना ही पड़ेगा। उसे सबक सिखाना ही होगा।” कौए ने कहा।

“पर कैसे?” भालू बोला।

“बस उसे याद दिलाते रहो कि उसकी पूँछ वास्तव में तुम्हारी है।” कौए ने राय दी।

“मैं अभी जाता हूँ।” भालू बोला।

“ठहरो,” कौए ने कहा। “हम लोग साथ–साथ चलेंगे, आज रात में।”



आधी रात थी।

लोमड़ी गहरी नींद में सो रही थी। अचानक दरवाज़ा पीटने की आवाज़ आई।



सोचो आगे क्या हुआ होगा? क्या जानवर लोमड़ी को सबक सिखा पाएँगे?

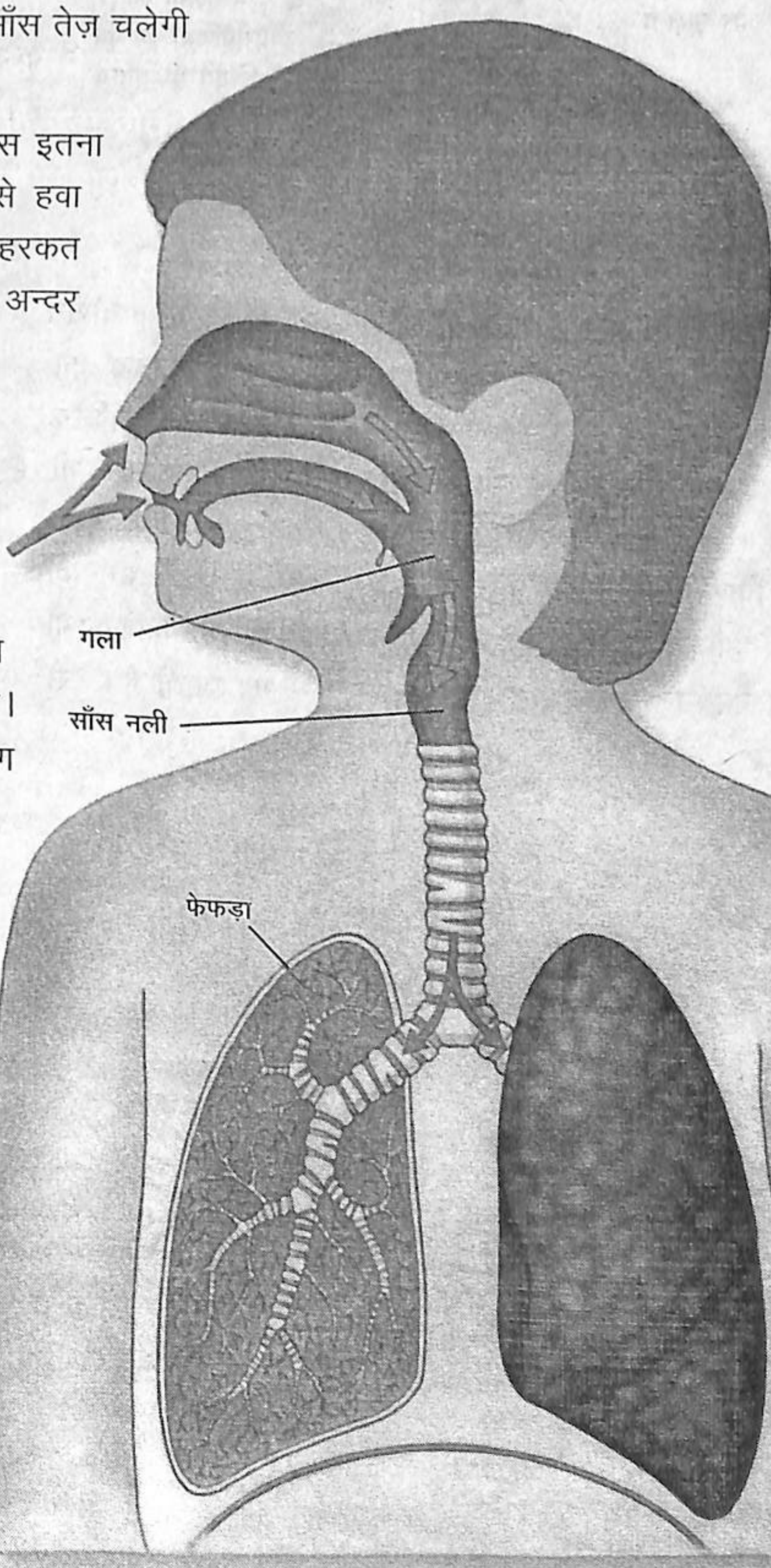
कहानी का शेष भाग अगले अंक में....

अनुवाद – दिनेश रस्तोगी
चित्र – संतोष श्रीवास्तव

चलती का नाम साँस

मैच का रोमांच चरम पर है... दो गेंदें बची हैं और पाँच रन बनाने हैं! शोएब गार्ड ले रहे हैं.... इरफान ने दौड़ना शुरू किया और ये चार रन... अब आखरी गेंद.... हज़ारों देखने वालों की साँसें रुक गई हैं ...। मैच कितना भी रोमांचक हो जाए पर क्या कभी साँस रुकती है? लोग तो यह भी कहते हैं कि उन्हें साँस लेने तक की भी फुरसत नहीं है। पर साँस का फुरसत या काम से कोई ऐसा ताल्लुक नहीं है। हाँ इतना ज़रूर है कि तेज़ काम करोगे तो साँस तेज़ चलेगी और सोते वक्त धीमी।

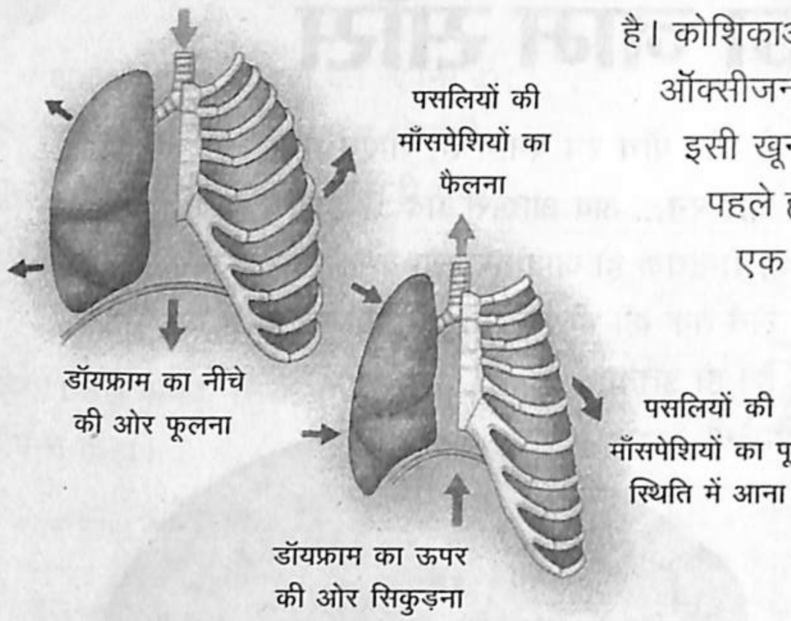
साँस लेने के बारे में हमें तो बस इतना ही पता चल पाता है कि नाक से हवा अन्दर गई, पेट और सीने में एक हरकत हुई और नाक से हवा निकली। पर अन्दर क्या हुआ...???



शुरूआत साँस लेने से ...

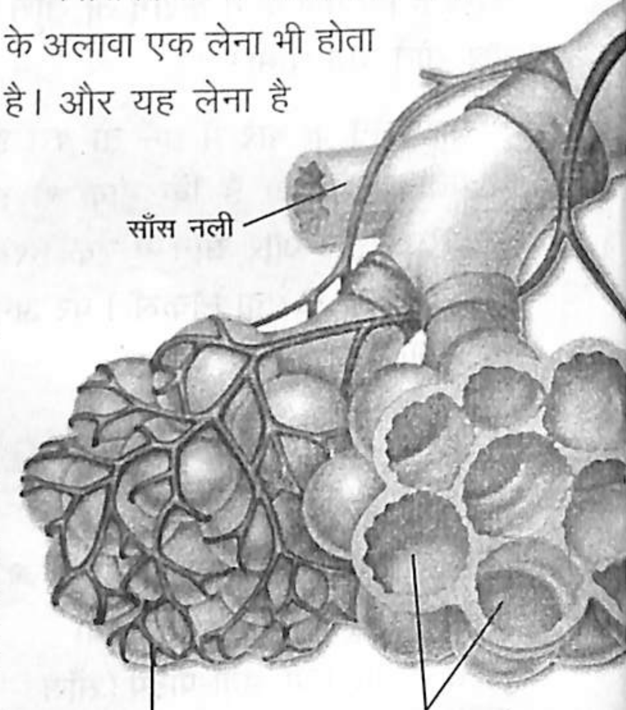
हमने हवा को अंदर खींचा। इसके दो रास्ते हो सकते हैं एक नाक और दूसरा मुँह। नाक या मुँह से ली गई हवा, हवा-पाइप (साँस की नली) से फेफड़ों में पहुँचती है। फेफड़ों में ही हवा से ऑक्सीजन अलग होती है और खून में जा मिलती है। फेफड़ों में नलियों के महीन जाले फैले होते हैं इनके सिरों पर हवा की बहुत छोटी-छोटी थैलियों के गुच्छे होते हैं। ये सभी महीन नलियाँ साँस-नली की शाखाएँ ही होती हैं। इन थैलियों पर खून की नलियाँ (धमनी और शिराएँ) लिपटी होती हैं। इन थैलियों की झिल्ली से ऑक्सीजन खून में जा मिलती

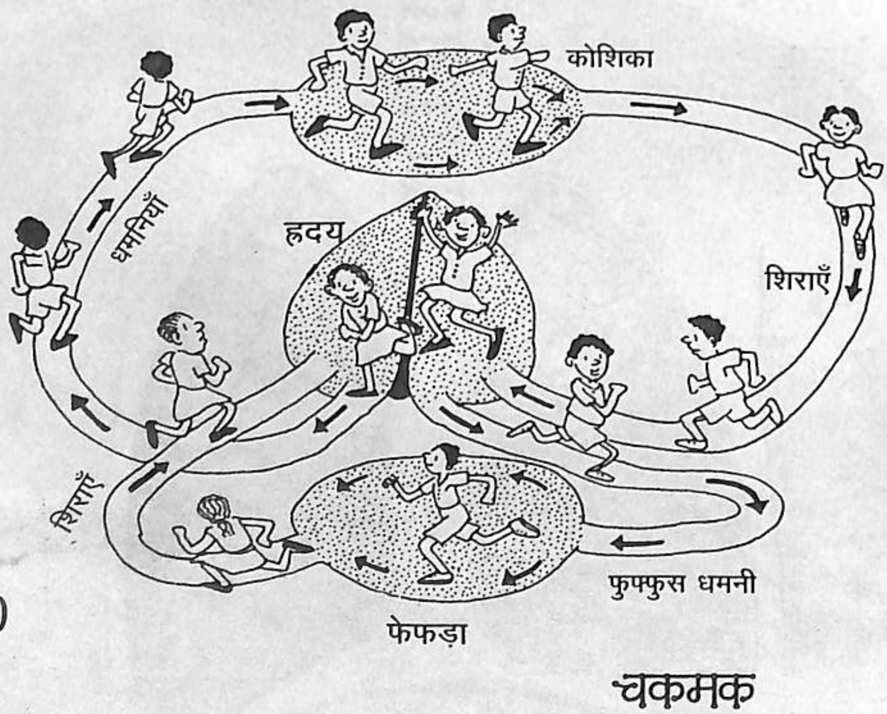
है। कोशिकाओं को ऊर्जा पाने के लिए (दहन की क्रिया) ऑक्सीजन की ज़रूरत होती है। यह ऑक्सीजन उन्हें इसी खून से मिलती है। ऑक्सीजन वाला यह खून पहले हृदय में पहुँचता है और फिर शरीर की एक-एक कोशिका तक ऑक्सीजन पहुँचाता है।



साँस छोड़ना

कोशिकाओं में ऑक्सीजन देने के अलावा एक लेना भी होता है। और यह लेना है कार्बनडायऑक्साइड का। कोशिकाओं में दहन की क्रिया के दौरान कार्बनडायऑक्साइड बनती है। इस कार्बनडायऑक्साइड का शरीर से निकलना बहुत ज़रूरी होता है। एक हद से अधिक कार्बन डायऑक्साइड हमें बीमार कर सकती है या मार भी सकती है। कार्बनडायऑक्साइड युक्त खून पहले हृदय तक जाता है और फिर फेफड़े तक पहुँचता है। फेफड़ों में जहाँ हवा की थैलियों से ऑक्सीजन खून की नलिओं में मिलती है वहीं कोशिकाओं से लौटी कार्बनडायआक्साइड इन थैलियों में भर जाती है। इसे साँस छोड़कर हम बाहर निकाल देते हैं।





साँस लेने में हृदय की भूमिका अहम है। हृदय खून को पम्प करता है तभी तो ऑक्सीजन कोशिका-कोशिका तक पहुँचती है। और कोशिकाओं से कार्बनडायआक्साइड युक्त खून फेफड़े तक पहुँचता है।

यह तो हुई साँस लेने और छोड़ने की मोटी-मोटी जानकारी। पर साँस

लेने और छोड़ने की प्रक्रिया में बड़ी पेचीदगियाँ हैं। जैसे फेफड़ों में हवा से ऑक्सीजन का अलग होना... ऑक्सीजन का खून में मिलना... फिर कोशिका का ऑक्सीजन की मदद से ऊर्जा पाना ... साँस लेने और छोड़ने में हृदय की भूमिका और फिर फेफड़े से कार्बनडायऑक्साइड का बाहर निकलना।

कुछ मज़ेदार तथ्य

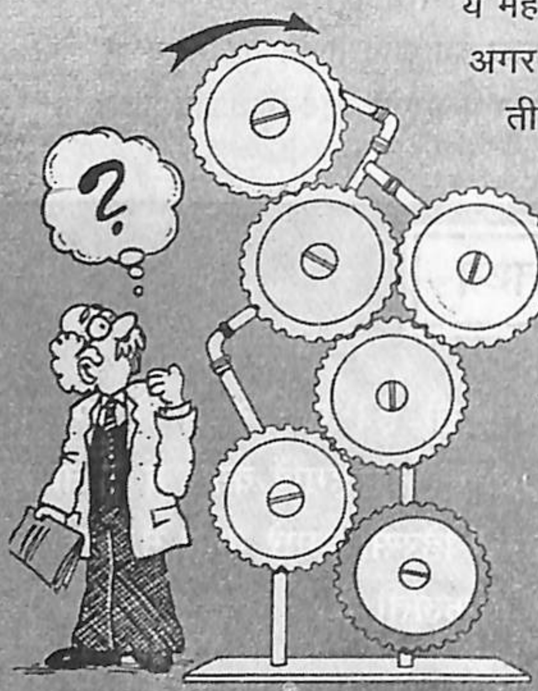
* हवा में केवल इक्कीस प्रतिशत आक्सीजन होती है। एक साँस में हम जो आक्सीजन लेते हैं उसमें से भी सिर्फ एक चौथाई भाग हमारे काम में आता है। यानी साँस में हम जो हवा लेते हैं उसका बीसवाँ हिस्सा हमारे काम में आता है। शेष हिस्सा और कार्बनडायआक्साइड बाहर निकलती है।

* दौड़ते वक्त हम सामान्य से छह गुना ज्यादा हवा साँस द्वारा खींचते हैं।

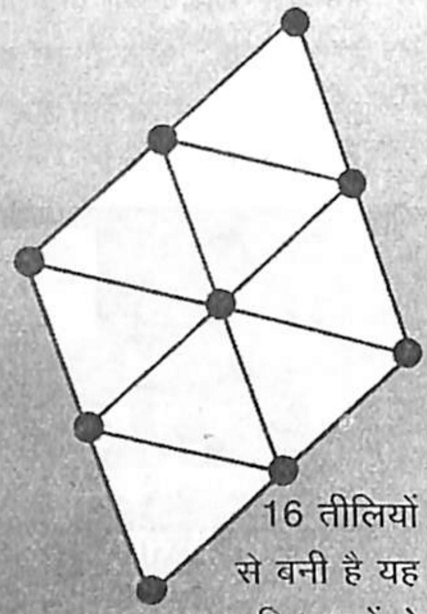
* हवा की जिस थैली की चर्चा हमने अभी की वह इतनी छोटी होती है कि तीस थैलियाँ मिलकर भी एक छोटे से बिन्दु के बराबर होगी। हमारे फेफड़े में इनकी संख्या पचास करोड़ होगी। खाँसी या छींक और कुछ नहीं बल्कि हवा का फेफड़े से बाहर की तरफ तेजी से दौड़ना है। इस हवा के साथ धूल या ऐसे ही कुछ और कण बाहर आ जाते हैं। बाहर की तरफ दौड़ती इस हवा की रफ्तार एक सौ पचास किलोमीटर प्रति घण्टा होती है।

* जैसे ही सीने और पेट को अलग करने वाली झिल्ली, डायफ्राम की माँसपेशियाँ सिकुड़ती हैं। वैसे ही सीने के अंदर का स्थान फैल जाता है। इस तरह आयतन के बढ़ने के कारण फेफड़ों के अंदर का दवाब घटता है। और हवा तेज़ी से फेफड़ों के अंदर आती है।





ये महोदय सोच रहे हैं कि अगर ऊपर के पहिए को तीर की दिशा में घुमा दिया जाए तो सबसे नीचे वाला पहिया किस तरफ घूमेगा? क्या तुम मदद करोगे?

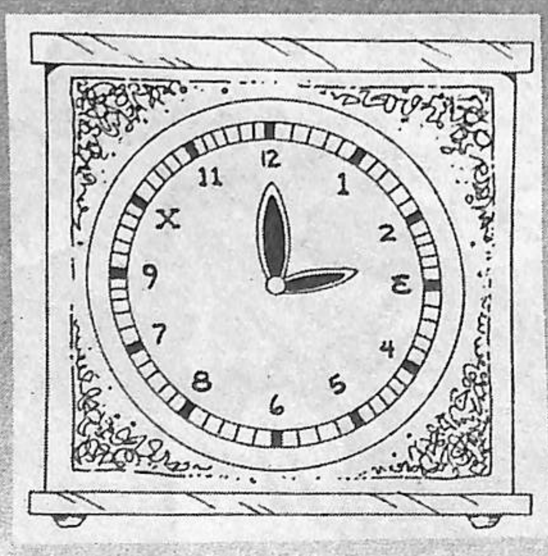


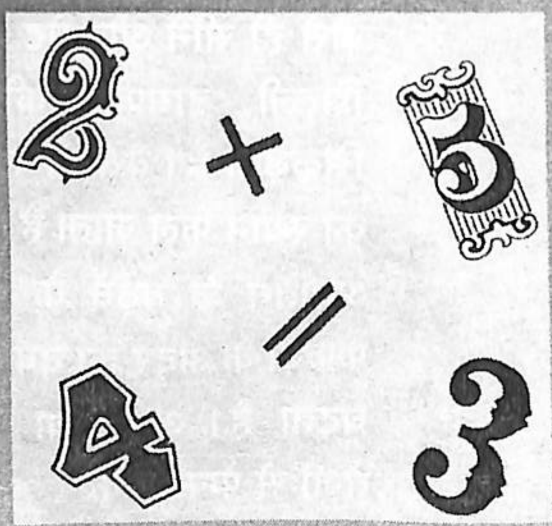
16 तीलियों से बनी है यह आकृति। इनमें से कोई चार तीलियाँ इस तरह हटाओ कि नई आकृति में चार एक जैसे त्रिभुज बनें।



माथा पच्ची

इस घड़ी वाले चित्र में थोड़ी न ज़्यादा सात गलतियाँ हैं। क्या तुम बता सकते हो कौन-कौन सी?

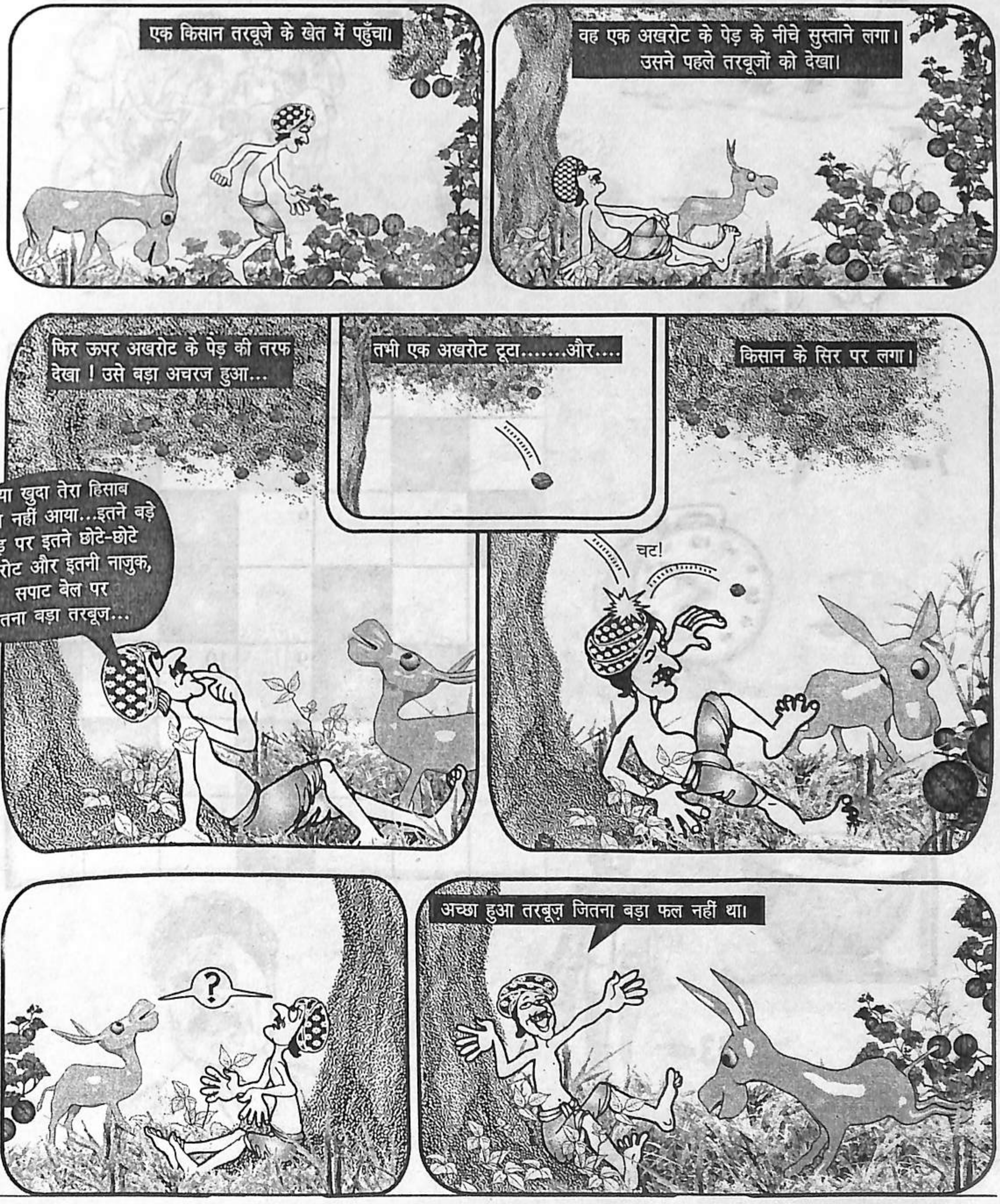




इन अंकों को ऐसे जमाओ कि सही समीकरण बने।

खुदा का हिसाब

चित्र- शिवेन्द्र पाँडिया



चित्र-पहेली

संकेत



1

3



5

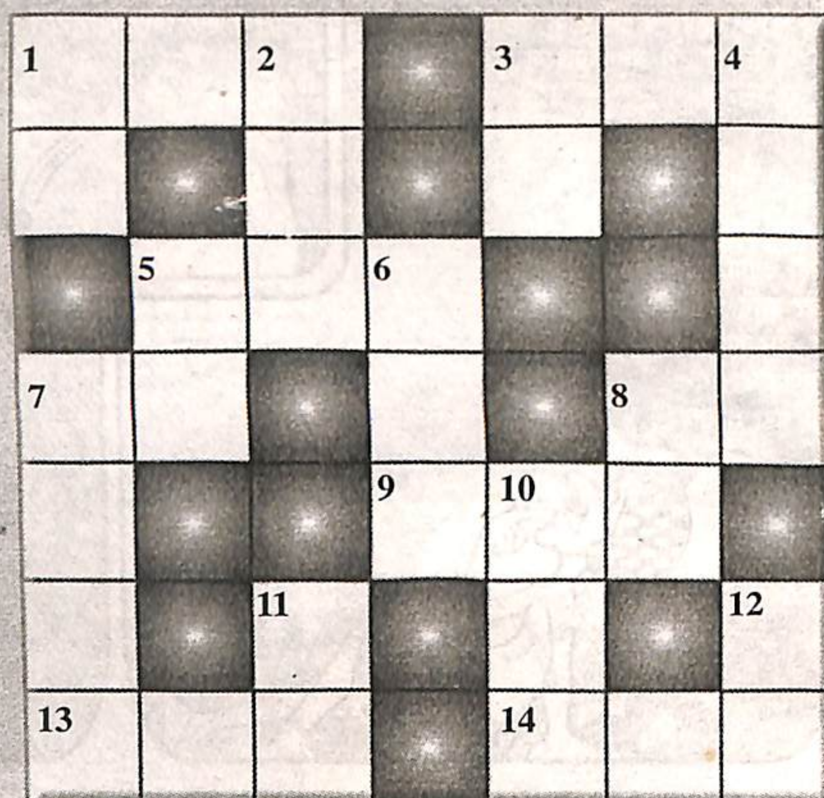




7

8







9



13

14



(एक क्रिकेट खिलाड़ी)

1

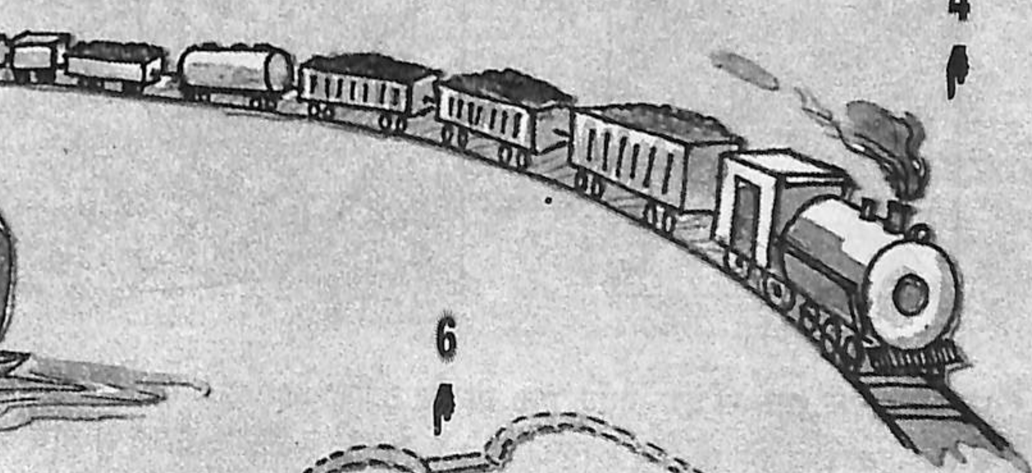


2



3 अप्रैल और जून के बीच रह गया

4



5



6



7



8



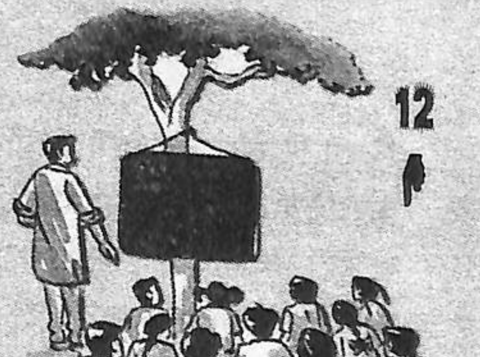
10



11



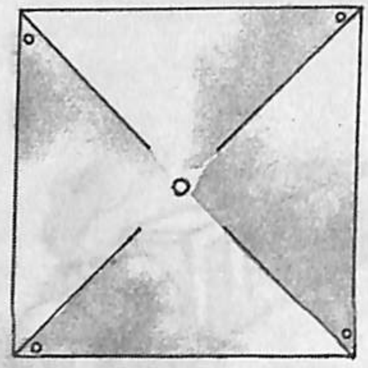
12



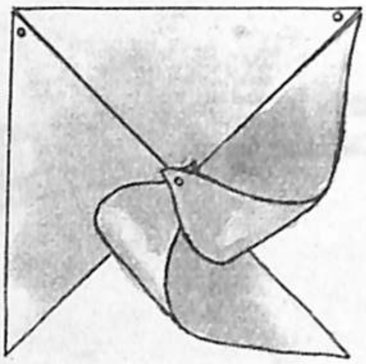
अपनी प्रयोगशाला

भाप का इंजिन या विद्युत मोटर की खोज से पहले वायु या जल ऊर्जा से ही फैक्टरियों आदि में काम हुआ करता था। यहाँ हम एक फिरकी के ज़रिए इन ऊर्जाओं का एक अंदाज़ लगाते हैं। वैसे तो बहुत सम्भव है तुमने कागज़ से ऐसी फिरकी बनाई होगी।

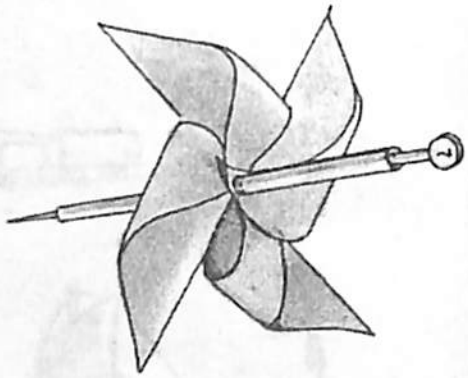
इस बार प्लास्टिक की फिरकी बनाते हैं।



(1)



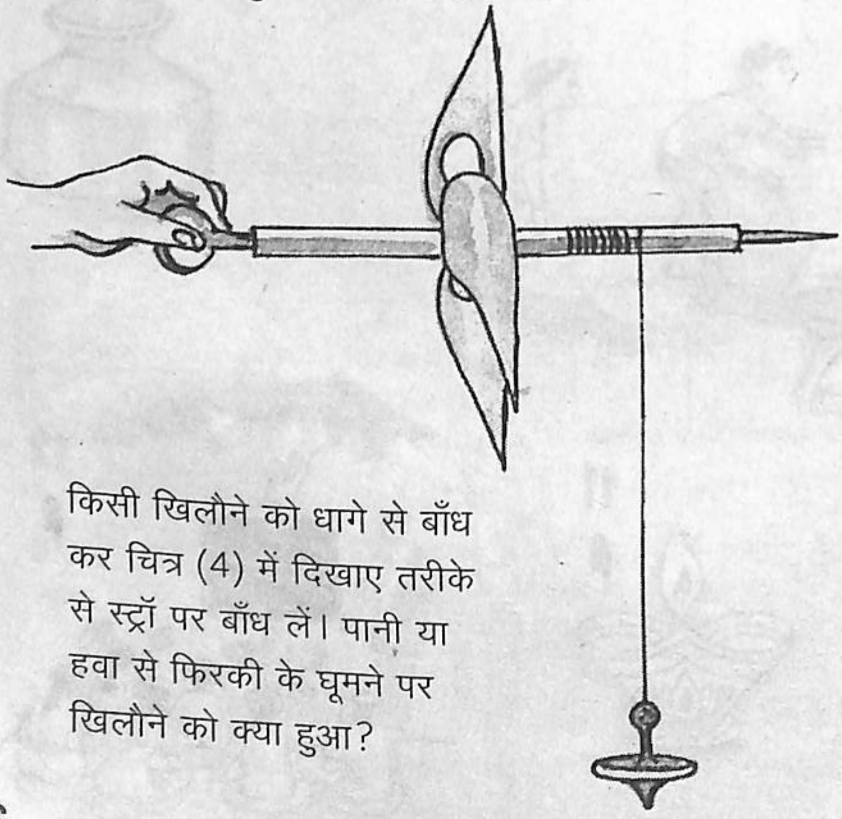
(2)



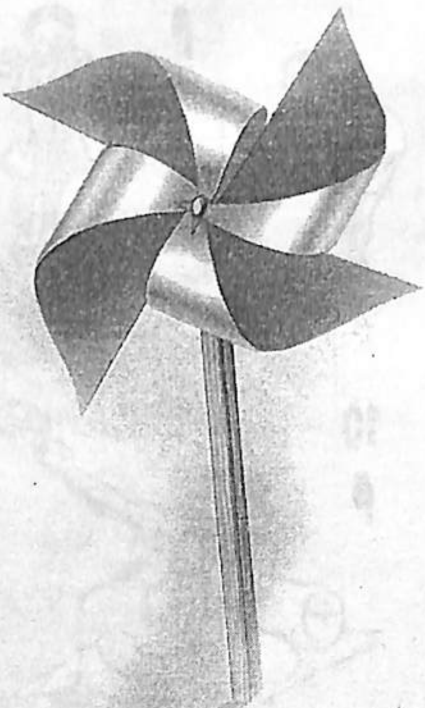
(3)

प्लास्टिक की शीट से ध्यानपूर्वक एक चौकोर टुकड़ा काट लें। फिर बीच में और चारों कोनों में एक-एक छेद कर लें (1) व (2)। चित्र में दिखाए तरीके से कोनों से बीच की तरफ चीरा लगा लें। बीच वाले छेद से चीरे की दूरी लगभग 3 सें.मी. हो (2)। स्ट्रॉ को कोनों के छेद और बीच वाले छेद में पिरो लें। छेदों को धागे से बाँध लें ताकि वे खुले नहीं।

अब स्ट्रॉ में स्वेटर बुनने वाली सिलाई को पिरो लें।



किसी खिलौने को धागे से बाँध कर चित्र (4) में दिखाए तरीके से स्ट्रॉ पर बाँध लें। पानी या हवा से फिरकी के घूमने पर खिलौने को क्या हुआ?



चली हवाएँ सनन सनन



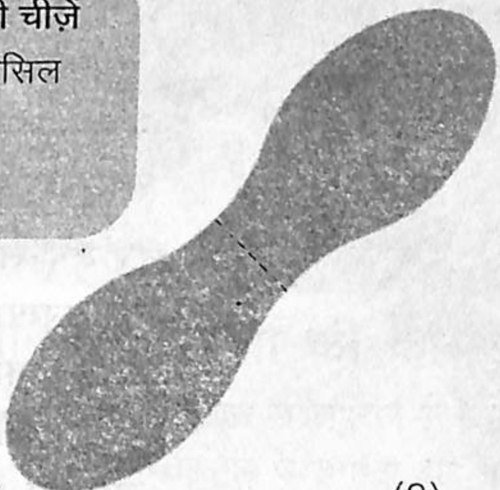
तेज़ हवा में बड़ी ताकत होती है। जब यह ज़ोरों से चलती है तो बड़े-बड़े पेड़ तक झुककर सलामी देने लगते हैं। कई बार तो टूट भी जाते हैं। सोचो ज़रा आँधियों में चिड़ियों का भला क्या होता होगा?

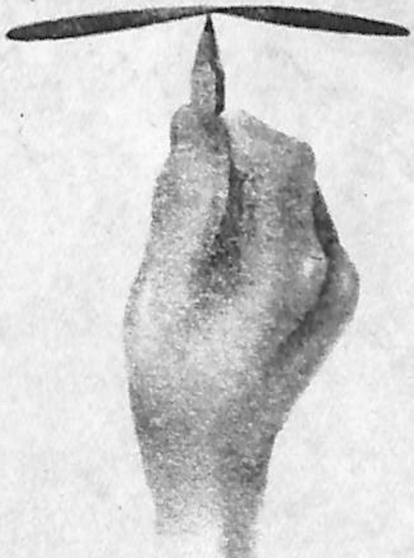
हलकी हवा-भारी हवा

हवा के बारे में एक बात और सुनने में आती है कि गरम हवा हलकी होती है। भई यूँ ही कैसे मान लें। करके देखते हैं।

जुगाड़ी जाने वाली चीज़ें

- एक नुकीली पेंसिल
- कार्ड शीट
- कैंची





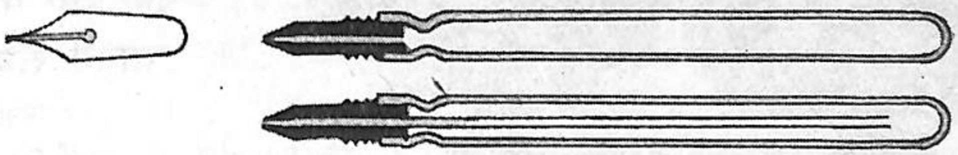
(1)

यहाँ बनाए गए पँख को एक कार्ड शीट पर छापकर काट लो। बीच में बनी टूटी रेखा पर से कागज़ को मोड़ो और एक नुकीली चीज़ या पेंसिल पर पँख का संतुलन बिठा लो।

(2)

पेंसिल को सीधे पकड़े रहो। तुम्हारी हथेली की गरम हवा ऊपर उठेगी और पँख घूमने लगेगा। अगर न घूमे तो लालटेन या मोमबत्ती के ऊपर रखकर देखना।

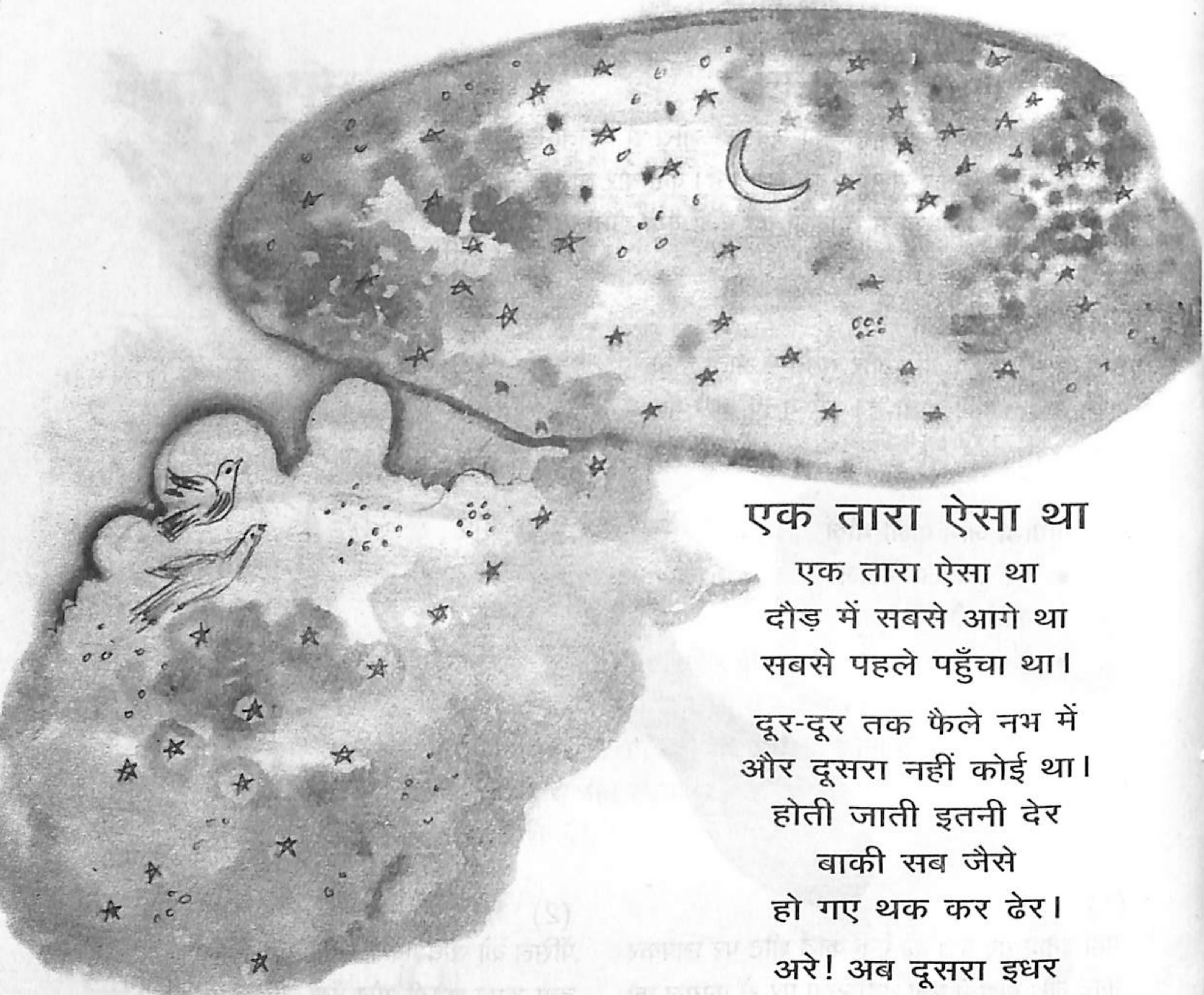
यहाँ दो फाउन्टेन पेन दिए गए हैं। दोनों पेनों में स्याही भरने के लिए रबर नली का उपयोग किया गया है। चित्र ख में रबर के अन्दर एक पतली नली और लगी है।



क

ख

पेनों को स्याही की दवात में डुबोकर यदि हम रबर की नली के ऊपरी सिरों को बार-बार दबाएँ और छोड़ें तो स्याही किस में अधिक भरेगी क में या ख में। कारण बता सकते हो।



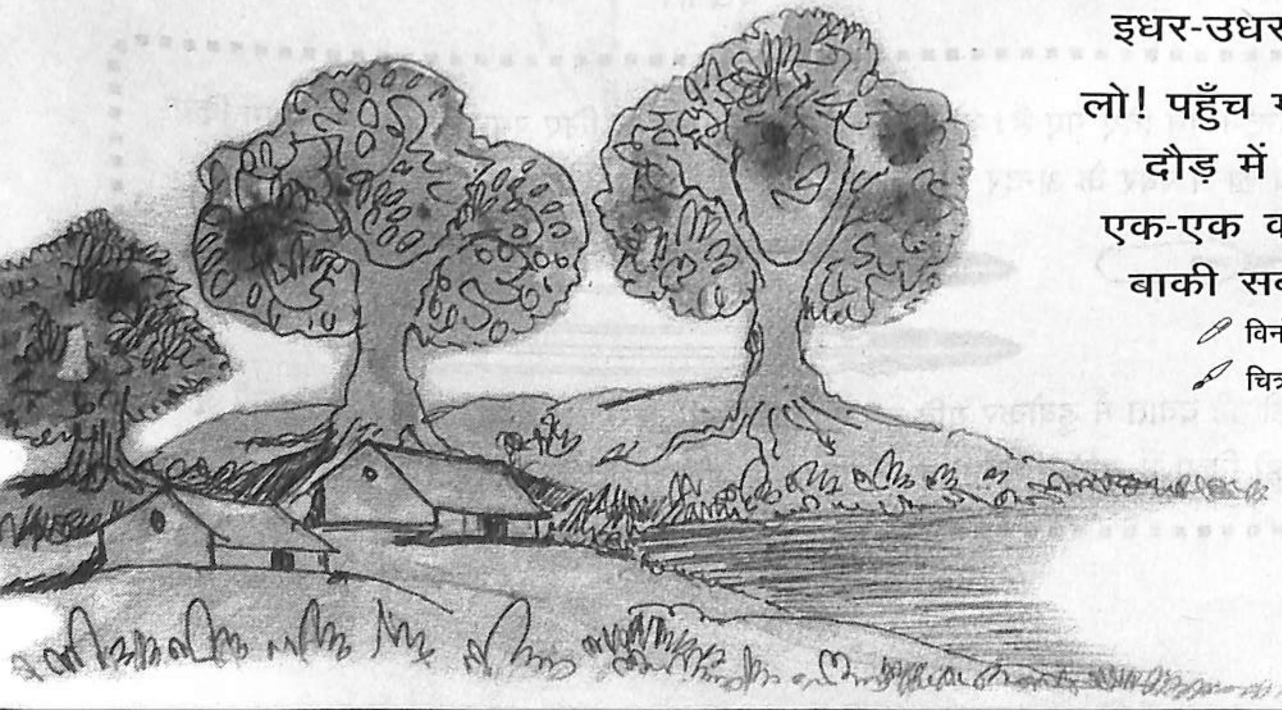
एक तारा ऐसा था

एक तारा ऐसा था
दौड़ में सबसे आगे था
सबसे पहले पहुँचा था।

दूर-दूर तक फैले नभ में
और दूसरा नहीं कोई था।
होती जाती इतनी देर
बाकी सब जैसे
हो गए थक कर ढेर।

अरे! अब दूसरा इधर
तीसरा भी इधर
फिर दिखे बहुत
इधर-उधर।

लो! पहुँच गए!
दौड़ में पिछड़े
एक-एक कर
बाकी सब तारे।



विनोद कुमार शुक्ल
चित्र- अशोक चंचल



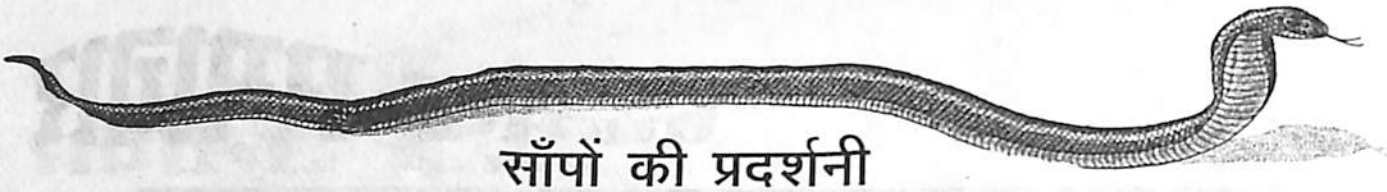
आदिवासी बच्चों की कार्यशाला सम्पन्न

पिछले हफ्ते मध्यप्रदेश के एक शहर जबलपुर में एक अनूठी कार्यशाला हुई। इस दो दिनी कार्यशाला में मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के लगभग चार सौ आदिवासी बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय बाल भवन के द्वारा किया गया। राष्ट्रीय बाल भवन का उद्देश्य बच्चों की प्रतिभा को उभारना व उसे मंच देना है। यह पहला मौका था जब बालभवन ने आदिवासी बच्चों के लिए ऐसी कार्यशाला आयोजित की है। इस कार्यशाला में बच्चों ने अपनी अपनी शैलियों के चित्र बनाए। लोकगीत सुनाए। और अपने पारम्परिक नृत्य पेश किए।

हींग लगे न फिटकरी

कमलेश कटारे की उम्र तेरह साल है। वो पाँचवीं तक स्कूल गया। फिर कुछ कारणों से स्कूली पढ़ाई छोड़ दी। इसके बाद शुरू हुआ स्कूल के बाहर सीखने का सफर। वह अपने पिता के साथ गैरेज में काम करने लगा।

उसके पास एक स्कूटर हुआ करता था। वह इससे ज़रा सा नाखुश भी था। वजह यह थी कि स्कूटर हर रोज़ पच्चीस तीस रुपए का पेट्रोल खा जाता था। उसने सोचा कि क्यों न अपनी साइकिल में कुछ ऐसी जुगाड़ की जाए कि इस पेट्रोल वाली गाड़ी से निजात मिले। बस उसने अपने चाचा और बड़े भाई की मदद से शुरू कर दी साइकिल को स्कूटर में बदलने की जुगाड़। उसमें एक गियर बॉक्स लगा। लाइटें लगीं। और तो और एक टेपरिकॉर्डर भी लगाया गया। अब यह साइकिल ज़रा सा पैडल मारने पर चालीस किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से दौड़ सकती है। यह कमाल करने वाला कमलेश मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के एक कस्बे मुल्ताई में रहता है।



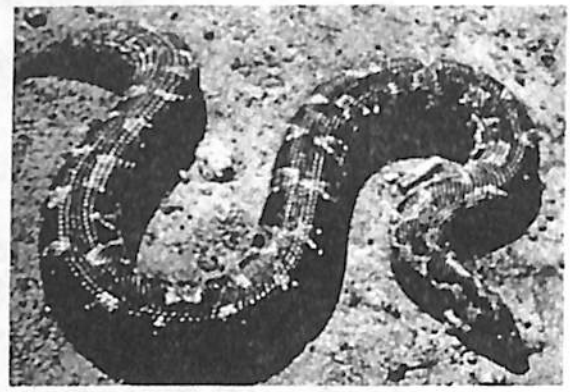
साँपों की प्रदर्शनी



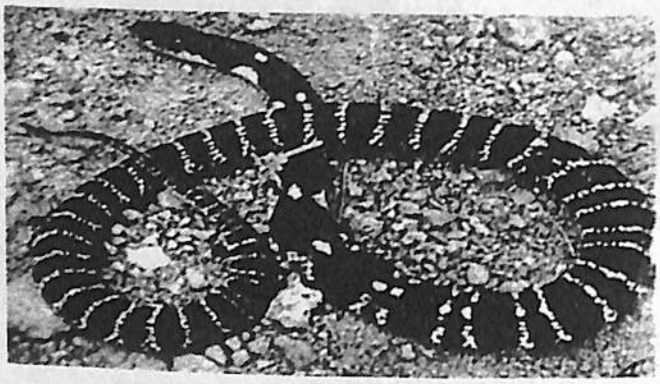
अजगर



कोबरा



माटी का साँप



करैत

सितम्बर के पहले हफ्ते में भोपाल में साँपों की एक प्रदर्शनी लगी। इसका आयोजन क्षेत्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय ने किया। भोपाल के हज़ारों बच्चों एवं बड़ों ने इस प्रदर्शनी को देखा। इस प्रदर्शनी में दिखाए गए साँपों को भोपाल के मोहम्मद सलीम ने पकड़ा था। उन्होंने बच्चों को साँपों के बारे में दिलचस्प जानकारियाँ भी दीं। बच्चों ने साँपों को छूकर देखा। इस प्रदर्शनी में साँपों के बारे में विभिन्न जानकारियों वाले पोस्टर भी लगाए गए थे। हम यहाँ पर कुछ साँपों के चित्र भी दे रहे हैं।

उल्टा पुल्टा

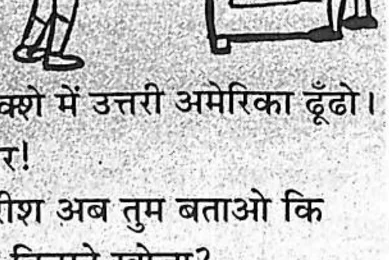


शिक्षक - तुम देरी से क्यों आए?
छात्र - सर, स्कूल के पास लगे बोर्ड के कारण।
शिक्षक - बोर्ड के कारण?

छात्र - सर, उस पर लिखा था -

आगे स्कूल है धीरे चलें।





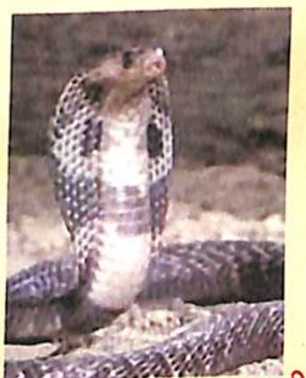
शिक्षक - लाली नक्शे में उत्तरी अमेरिका ढूँढो।
छात्र - ये रहा सर!
शिक्षक - सही। हरीश अब तुम बताओ कि अमेरिका किसने खोजा?
हरीश - सर, लाली ने!



संखारा साँप
सिर्फ रात में निकलता है



उड़नेवाला साँप



भारतीय कोबरा
अत्यंत विषैला



पानी का साँप



सफेद होंठ वाला - पिट वाइपर
कम विषैला



रेतीले क्षेत्रों में रहनेवाला
दो मुँह वाला

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05



जबलपुर में हुए आदिवासी बालसम्मेलन में सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करती एक बालिका

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना